Sep, 77

मानव मन्दिर

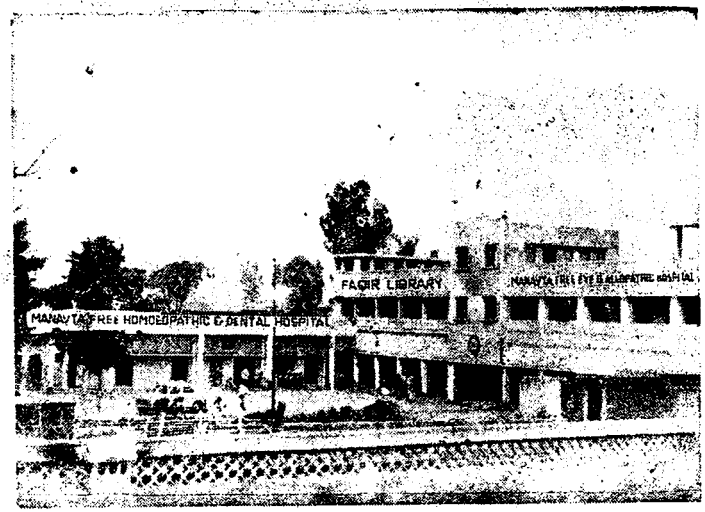

9/77

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतेहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट

सम्पादक : सेठ दुर्गा दास

FORM IV

(See Rule 8

Place of Publication	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Publisher's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Editor's Name	**Seth Durga Dass**
Nationality	**Indian**
Address	**House No. 2, Sector 19—A Chandigarh.**
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I, M.R. Bhagat hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief,

Signature of Publishers

Dated. 9.6.76

Printed and Published by M. R. Bhagat at Sudhakar Printers, Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, Hoshiarpur.

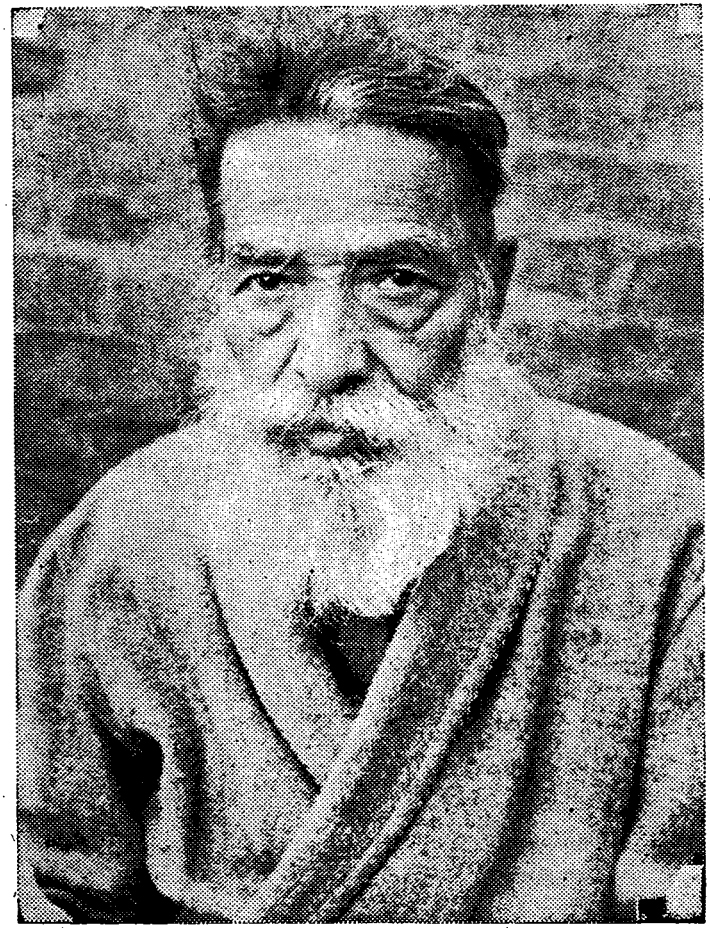

परमसन्त, परमदयाल
श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

RADHAKRIJAY PATEL
PURNADAYAL

मासिक—

मानव मन्दिर

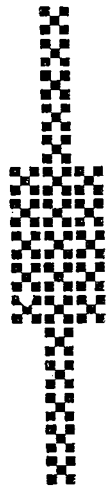

संरक्षक :

परम दयाल पं० फ़कीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ४	सितम्बर १९७७	संख्या ५

निष्काम सेवा

लेखक :—सेठ दुर्गा दास साहिब, चण्डीगढ़

राधास्वामी !

तरवर-सरवर-सन्त जन चौथे बरसे मेह।
औरन के कारने चारों धारें देह।

कितना सुन्दर शब्द है। जीवन की सारी फिलासोफी इस में भरी पड़ी है, केवल विचार करने की आवश्यकता है। सांसारी जीवन किस तरीका से गुज़ारना चाहिये, बहुत सुन्दर ढंग से इस शब्द में ब्यान किया गया है। यह शब्द बहुत शिक्षा देने वाला है। इस शब्द पर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। मेरी योग्यता के बस की बात नहीं है लेकिन दिल में आया कि इस शब्द की बाबत कुछ वर्णन करूं। हज़ूर के चरनों में सिर झुकाया, दया के लिये प्रार्थना की यथा शक्ति लिख रहा हूं।

कुदरत की सब शक्तियों की ओर ध्यान दें कि किस सुन्दरता से अपना अपना कर्तव्य पूरा कर रही

हैं। सूरज की तरफ ज़रा ध्यान दीजिये, ग़ौर कीजिये कि सूरज अपनी किरण, अपनी गरमी और अपनी रोशनी हर अमीर गरीब को एक जैसी देता है। गन्दगी को दूर करता है। सफाई और शुद्धताई लाता है, किसी में अन्तर नहीं रखता है, सबकी भलाई करता है, सबके लिये बराबर अन्न उगाने में सहायता करता है। हिन्दुस्तान, ईरान, चीन जर्मनी, अमरीका और इंगलैन्ड आदि आदि, सब को एक दृष्टि से देखता है। सूरज भगवान के यह सब काम बिना स्वार्थ के होते हैं। यह बात विचार योग्य है।

इसी तरह वायु को देखिये, सब के लिये एक जैसी है। ग़रीब अमीर सब इससे लाभ उठाते हैं। कोई इस पर अपना हक नहीं जमा सकता। कोई इसके किसी भाग पर कबज़ा नहीं कर सकता, बिना स्वार्थ सब को एक जैसा लाभ पहुंचाती है। क्योंकि इन्सान का प्रकृति की शक्तियों से सदा चौबीस घंटे मेल जोल रहता है इसलिये इस के गुणों की तरफ इन्सान की नज़र नहीं जाती, वरना इन का उदाहरण मानव जाति के लिए कितना शिक्षाप्रद है।

सन्त भी यही काम करते हैं । बिना किसी स्वार्थ के जीवों का उद्धार करते हैं । जो इनकी शरण में आया, उसको अपनी छाती से लगाया, ढारस दी, प्यार किया, अपने मीठे वचनों से उसके मन को शान्त किया । अपने सत्संग द्वारा उसको विवेक प्रदान किया, उस के सब बन्धन काटे, बन्दीछोड़ कहलाये । मन के सब भ्रम मिटाये, सच्चाई बताई, और निश्चयात्मक बना दिया, यम फांस से छुटकारा दिलाया । हम मन की बासनओं को रखते हैं, बासनाओं में प्राणी सदा फंसा रहता है । सब प्रकार की बासनाओं की काया पलट दी, नया जीवन दिया नई ज़िन्दगी मिली, नई उमंग आई, अपने घर जाने की इच्छा पैदा हुई और शान्ति का अधिकारी बनने लगा, "लोक अलोक पाऊं सुख धामां" तीन लोक की सम्पत्ति मिली, यश मिला, मान मिला, धन मिला, सुख मिला ।

लेकिन सत्गुरु को इस बदले क्या मिला ? इस का बदला क्या मिला, उन्होंने तो औरन कारणे अवतार लिया था ।

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
चार लोक की सम्पदा, सो गुरु दीना दान।
चार खान में भरमता, कबहूं न लगता पार।
सो तो फेरा मिट गया, सतगुरु के उपकार।
सीस दिये जो सतगुरु मिले, तो भी सस्ता जान।

क्यों :-

गुरु पारस में अन्तरो, जानत संत सुजान।
यह लोहा कंचन करे, गुरु कर लें आप समान।

गुरु के बराबर कोई दाता नहीं है, अपने चेलों को चार लोक की सम्पदा बक्श देता है। शारीरिक, मानसिक, आत्मिक बल और सुरत में ठहराओ मिल जाता है। इसलिए कहा गया है कि सिर देने से सत्-गुरु मिल जाये तो भी सस्ता जान लेना चाहिये, सिर देने का अर्थ अहम् भाव और अहंकार मिट जाना है। गुरु को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। वह धन और मान का भूखा नहीं।

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का, वो तेरा उपकार करावे
भूखे नंगे को खिलावे। वो तो अपने समान सब को बना लेते हैं। यह उनकी जीवों पर दया होती है, इन पर उन का यह परोपकार होता है।

इसी तरह धरती, हर प्राणी का पालन पोषन करती है। हर एक प्रकार की खुराक पैदा करती है। हर प्रकार का धन उगलती है। कौन सी वस्तु है जो जीव को नहीं देती, इसके अन्तर हर प्रकार के पदार्थ भरे पड़े हैं। लाखों करोड़ों सालों से ढेरों के ढेर धरती के अन्दर से निकाले गए हैं। लेकिन अभी तक किसी वस्तु का अन्त नहीं है। सब के साथ बराबर व्यवहार करती है। एक जैसी खुराक देती है, एक जैसा धन देती है अमीर, ग़रीब, बलवान और निर्बल में कोई फरक नहीं रखती, लेकिन ऐसा सब कुछ बिना निज लाभ के करती है बल्कि आश्चर्य यह है यह अपनी हस्ती को आप के पांव तले रखती है। इससे अधिक अधीनता और क्या हो सकती है। ऐसा परोपकार कौन कर सकता है। ऐसी मिसाल नहीं मिलेगी। ऐ प्राणी, तू इससे शिक्षा सीख। जो यह करती है तुम भी यही करो। बिना फल की इच्छा के सब की भलाई किया करो। सब की सहायता किया कर, दया किया करो ताकि जो ऋण आप सिर पर उठा रहे हैं, सूरज का ऋण, हवा का ऋण, धरती का ऋण गुरु का ऋण, देश का ऋण, मां बाप का

ऋण, इन सब ऋणों का भार हलका कर सको। ऋण उतारना तो कठिन बात है, ऋण स्वीकार कर लो और हलका करने की कोशिश में रहा करो, आप का कल्याण इसी बात में है, लेकिन देखना अहम भाव न आने पाये, दीन सदा बने रहना।

वृक्ष को फल लगता है लेकिन वृक्ष स्वयं फल को नहीं खाता दूसरों का पेट भरता है। दूसरों को छाया देता है। गरमी सरदी से सब को बचाता है। दम तोड़ने के बाद अर्थात मौत के बाद इसका एक-एक अंग शरीर का, जीव के काम आता है। जीव को लाभ पहुंचाता है। अमीर, ग़रीब बलवान और निर्बल सब को बराबर बराबर लाभ पहुंचाता है। लेकिन बिना लाभ के। ऐ मानव, तू भी प्रकृति की शक्तियों से शिक्षा ग्रहण कर, अपनी ज़िन्दगी को इसी ढांचे में ढाल ले, और फिर ज़िन्दगी का आनन्द लिया कर, तुम को तो ईश्वर ने बुद्धि दी है, अपनी बुद्धि से काम ले अपने चारों तरफ नज़र को दौड़ा और विचार कर, क्या आप का यह धर्म नहीं है कि आप दूसरों के साथ परोपकार करें, बिना किसी चाह के, बिना फल की इच्छा के।

निज नाम

भूमिका

अपने कर्मों का मारा हुआ, मेरा भाग्य अच्छा या बुरा यह मुझे पता नहीं, मैं संतमत में आया। इसमें गुरु भक्ति और नाम भक्ति पर बल दिया जाता है। मेरी ९१ साल की आयु हो गई है। मैं इस नाम भक्ति और गुरु भक्ति के भेद को समझना चाहता था और इस भेद को समझने के लिए हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था। संत तारा चन्द जी जो राधास्वामी सत्संग घर दिनोद (ज़िला भिवानी, हरियाणा) के आचार्य हैं, मेरे पास आये। मैंने उनके लिए अपने जीवन का निज अनुभव कि निज नाम क्या है, वर्णन किया। सोचता हूं कि जो कुछ मैंने इस सत्संग में कहा है जीव इसके अधिकारी नहीं है। फिर सोचता हूं कि क्यू इस सत्संग को क्यों छपवाना चाहता हूं? केवल इस लिए कि

असली और सच्चे नाम की ग़लत समझ ने अनेक गद्दियां, अनेक मठ और अनेक विचार धारायें पैदा कर दी हैं। लोगों को इस का ज्ञान हो जाये और असलियत की समझ आ जाये।

मैं स्वयं देखना चाहता था कि यह नाम है क्या ? हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने कुछ तो अपने कर्मानुसार और कुछ दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा वश यह काम किया। मैं आशा करता हूं कि ये जो नाम देने वाले गुरु हैं ये सोचें कि जो कुछ मैंने लिखा है यह ठीक है या ग़लत है। अगर ठीक है तो ठीक ढंग से पब्लिक में प्रचार करें और अगर ग़लत है तो वे वेशक मेरा खण्डन करें मुझे कोई दुख नहीं क्योंकि मैं किसी बात का कोई दावा नहीं करता। क्योंकि मेरा अनुभव संतों की ऊंची बाणियों के साथ मेल खाता है इस लिए अपने निजी अनुभव के आधार पर मैं अपने आपको बदलने से रहा। मान लो कि मैं ग़लत हूं और मैंने इस नाम का प्रचार ग़लत किया है तो दूसरे महात्मा जो नाम देते हैं, गद्दिपति हैं या मठा-

धारी हैं वे मेरा खण्डन कर दें। मेरी अपनी नीयत साफ है और अगर मैं ग़लत हूं तो हज़ूर बाबा सावन-सिंह जी और हज़ूर दाता दयाल जी महाराज दोनों जिम्मेदार हैं जिन्होंने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी।

फकीर!

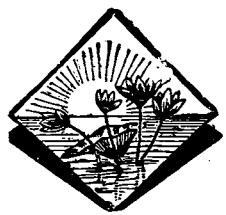

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक ८ जून १९७७

मेरे दाता दीन दयाल ।

तू करुणामय जगत आधारा, तू सब का है प्रतिपाला ।
तू स्वामी हम सेवक तेरे, नहीं है अब कोई रखवाला ।
तू दुख भंजन जन मन रंजन, काट भरम यह जंजाला ।
मात पिता तू हित सम्बन्धी, मैं तेरा बाल गोपाला ।
तू अथाह सागर है स्वामी, जीव नदी हैं और नाला ।
अन्धकार में बहु दुख पाया, करदे आज उजाला ।
तूने पाला तूने पोसा, छिन छिन तूने संभाला ।
दीन बन्धु रक्षा कर मेरी, पड़ा है करमन से पाला ।
न बल पौरुष न मेरे बुद्धि, कठिन है काल कराला ।
बल दे करूं भक्ति तेरी निश दिन, फेरूं नाम की मैं माला ।
तीन ताप मोहि अधिक सतावें, नाम से करदे सुखाला ।
कैसे दरस परस करूं तेरा, हिये में लगा है मेरे ताला ।

दे दे दे अब देर न कर तू, अमृत नाम रसाला।
आपको विसरूं जग को भुलाऊं, पीलू प्रेम पियाला।
माँगूं मान न मांगूं सम्पत, चाहूं न घोड़ न घुड़शाला।
राधास्वामी समरथ सतगुरु दाता, करदे मोहिं निहाला।

राधास्वामी। देखो तारा चन्द! तुम आये हो। यह वाणी सुनी। नाम के पीछे मैं भी चल रहा हूं। इस नाम का पता मुझे दिया तो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मगर मैं इस नाम को ऐ तारा चन्द। आप लोगों की बदोलत समझा। मुझे नाम का तो पता लग गया मगर अभी तक मुझसे उस अवस्था में ठहरा नहीं जाता। वह नाम क्या है जहां हमने ठहरना है? आयु बीत गई इस नाम को तलाश करते करते मगर नाम का पता मुझे आप जैसे महा-पुरुषों की बदौलत लगा। अब नाम की ओर चलता रहता हूं मगर इस नाम में हर समय मैं ठहर नहीं सकता, शायद यह मेरे प्रालब्द कर्मों के कारण होगा।

दे दे दे अब देर न कर तू अमृत नाम रसाला।
आपको बिसरू जग को भुलाऊं पी लूं प्रेम पियाला।

यह है असली नाम हम अपने आपको और संसार को भूल जाते हैं और यही राधास्वामीमत कहता है।

सुरत हुई अति कर मगनानी, पुरुष अनामी जाये समानी।

सन्तों का मार्ग यह है कि मरने से पहले मर जाओ। यह है आखरी नाम। वाकी जो नीचे के नाम हैं, सहसदलकमल, त्रिकुटि, सुन्नमहासुन्न और भंवरगुफा इनमें आदमी अपने आपको भूलता नहीं। इसलिए न घन्टा शंख नाम है न ओंकार नाम है न सोहंकार नाम है और न ही सत्याकार असली नाम है। यह तो सब जानते हैं कि सह सहसराकार ओंकार रारंगकार, सोहंकार और सत्यकार को ज़बान से रटना असली नाम नहीं है लेकिन अपने अन्तर में घण्टा शंख सुनना, बादल की गरज सुनना, रारंग सारंग या मुरली सुनना भी असली निजनाम नहीं है। हां! निज नाम तक पहुचने के लिए ये मार्ग में आते हैं।

दाता! मौज या मेरे कर्म मुझे आपके चरणों में ले गये थे। आपने आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। क्या शिक्षा बदलूं?

जो मेरा अपना अनुभव है वह कहता हूं। पता नहीं ठीक है, या ग़लत है।

दे दे दे अब देर न कर तू, अमृत नाम रसाला।
आपको विसरूं जग को भुलाऊं, पी लूं प्रेम पियाला।

यह तो है हजूर दाता दयाल जी महाराज का शब्द। यही राधास्वामी मत कहता है।

सुरत हुई अतिकार मगनानी।
पुरुष अनामी जाये समानी।

अनामी में समा जाने का क्या तात्पर्य है। बारह मासा के जेठ महीने में स्वामी जी महाराज ने भी यही कहा है कि उस अवस्था में चले जाने से वहां न खालिक है न मखलूक है, न गुरु है और न चेला है और न राम है और न रहीम है वहां न जात का पता है और न सिफात का। वहां न दुख है और न सुख है, न चिंता है और न फिकर है, यह है नाम की प्राप्ति। वह एक विशेष अवस्था है। मगर सत्संगी आपिस में लड़ाई भगड़े करते हैं कोई कहता है कि राम राम नाम है, कोई वहता है कि अल्ला-अल्ला नाम है, कोई कहता है कि पांच नाम नाम है, कोई कहता है कि राधास्वामी नाम है। जिस नाम

से या जिस विचार से तुम अपने आपको भूल नहीं सकते वह नाम नहीं है। बस एक ही फैसला। भूलना केवल शरीर और मन को ही नहीं है बल्कि अपनी हस्ती के वोध भानों को भी भूलना है। शेष जो कुछ अन्तर में अन्नमयकोश, मनोमयकोश, प्राणमयकोश विज्ञानमय-कोश और आनन्दमयकोश या सहसराकार, ओंकार रारंगका और सोहंकार ये हमारी अपनी चेतनता की अवस्थायें हैं जिनमें हम खुशी, आन्नद और ऋद्धि सिद्धि लेते हैं मगर अपने आपको भूलते नहीं और न ही इन स्थानों पर शान्ति मिलती है यद्यपि ज्ञान प्राप्त होता है। इन स्थानों पर असली नाम नहीं मिलता। यहां दुख के बाद सुख और सुख के बाद दुख भी आयेगा, बीमारी भी आयेगी, कभी मान होगा और कभी अपमान। यह संसार का व्यवहार है।

तारा चन्द ! तुम आये हो और मुझे गुरु मानते हो मगर आप लोग मेरे गुरु सिद्ध हुये जिन से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि मैं किसीके अन्तर नहीं जाता मैं अब अपने अन्तर राम को या हज़ूर दाता दयाल जी

महाराज को देखता था तो मैं भी उनको भूलता नहीं था। अब मुझे मंज़ल का पता तो लग गया मगर हर समय वहां ठहरा नहीं जाता, यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं वहां से वापिस आना नहीं चाहता मगर कोई वहां से धकेलकर मुझे वापिस ले आता है। क्यों ले आता है ? पता नहीं। मेरे कर्म या मौज मालिक। असली नाम तो मैंने आपको बता दिया। मगर इस नाम की इच्छा किसी को नहीं है। संसार तो खुशी, आनन्द और सिद्धि शक्ति चाहता है। इसके लिए साधन और अभ्यास करो। हर एक जीव की प्रकृति जुदा है इस लिए जैसा कोई है उसकी प्रकृति अनुसार उसको हिदायत करो और उसके जीवन को अच्छा बना दो और उसको मंज़ल पर पहुंचा दो। लोग बाणी पढ़कर पागल हो गये। असली नाम क्या है जहां हमने अपने आपको गुम करना है ?

दे दे दे अब देर न कर तू अमृत नाम रसाला।
आपको विसरूं जग को भुलाऊं पी लूं प्रेम पियाला।

यह है नाम। हमने इस अवस्था में जाना हैं यही हमारा आद है और यही हमारा अन्त है।

जो कुछ स्वामी जी ने इस अवस्था के बारे कहा है वह भी मैंने आपको बता दिया है। इस शब्द में आया है कि।

"आप को बिसरूं जग को भुलाऊं"।

एक बाहर का जगत है वह तो सुमिरन से ही भूल जाता है। एक हमारे अन्तर के जो तीन शरीर हैं हमने उनके खेल को भुलाना है। उस आखरी अवस्था को जहां हमने जाना है कबीर साहिब ने इस प्रकार वर्णन किया है।

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहं पूरन पुरुष हमारा।
जहं नहिं सुख दुख साच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उजियारा।
नहिं तहं ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, बेद कितेब न बानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहां हिरानी।
धर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मण्ड कछु नाहीं।
पांच तत्व गुन तीन नहीं वहां साखी शब्द न ताहीं।
मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना बृच्छ फल सौहै।
आअं सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहै।
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूलं।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के भूलं।

जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरवाना।

यह है असली नाम। अव मैं अपने जीवन का एक अनुभव बताता हूं जिसकी हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने अपने रसाला सन्त में पुष्टि की थी। वह यह है कि एक ही स्टेज पर सारे दर्जे खुल जाते हैं और अन्तिम अवस्था आ जाती है। अन्तिम अवस्था क्या है? अपने आपको और संसार को भूल जाना या सुरत का अनामी पद में जाकर मगन होके गुम हो जाना जिसको मुसलमान सूफि इस प्रकार वर्णन करते हैं।

तू दर्द गुम शो वसाल इं अस्तो बस।
तू मुबाश असला कमाल इं अस्तो बस।

ये निचले दर्जों के वोधभान या दृश्य हैं या उनकी चेतनतायें हैं। ये प्राकृतिक हैं। क्योंकि हर एक आदमी की प्रकृति एक दूसरे से नहीं मिलती। इस लिए सबके अन्तरी दर्जे भी एक जैसे नहीं खुलते।

बाकी रह गया संसार। संसार में खुश रहो। किसीकी सहायता करो। चिन्ता फिकर मत करो।

जो कुछ कर्म में है वह अवश्य मिलेगा। जिसने लेना है वह ले लेगा और जिसने देना है वह भी अवश्य देगा। सबने अपने २ कर्म का भोग भोगना है।

जब मानव किसी पूर्णपुरुष के अधीन इन *Stages* में से होता हुआ उस अवस्था में पहुंच जाता है जिसका वर्णन हजूर दाता दयाल जी महाराज ने अपने शब्द में किया है या कबीर साहिब या स्वामी जी महाराज ने वर्णन किया है। तो उसके बाद आदमी के अन्तर एक और अवस्था पैदा होती है जिसमें मैं अब रहने का यत्न करता रहता हूं। २४ घण्टे तो मैं अनामी धाम में नहीं रह सकता और न ही मैंने कोई और संत ऐसा देखा है जो हर समय अनामी धाम में रहता हो। हजूर दाता दयाल जी महाराज जब किताबें लिखते थे तो क्या अनामी धाम में बैठकर लिखते थे ? सन्तों ने चेले बनाये, सत्संगी बनाये और उनसे बातचीत करते थे क्या अनामी धाम में बैठ कर करते थे ? सन्तों ने डेरे बनाये क्या अनामी धाम में बैठकर बनाये ? इसके बाद ये ज्ञान हो जाता है कि मैं कौन हूं मेरा आद क्या है और अन्त क्या है। अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि हमारा आद वह

अवस्था है जहां हमारी हस्ती अर्थात हमारे हैपने का बोध समाप्त हो जाता है। तो मुझे क्या ज्ञान हुआ कि वह एक तत्व है। उसमें हिलोर उठती है, रचना बन जाती है, जीव जन्तु, सूर्य चान्द, सितारे सब बन जाते हैं और फिर जब उसकी मौज होती है तो उसमें समा जाते हैं। इस अनुभव के पक्का हो जाने के बाद फिर जब तक मानव मालिक की मौज से जीवन में है वह शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोध-भानों में खेलता हुआ उसमें फंसता नहीं। उस अवस्था का नाम है जीवन्मुक्त अवस्था या विदेहगति यही अन्तिम अवस्था है। यही सन्त कहते हैं और यही सब धर्मों की अन्तिम अवस्था है।

मैं सन्त तारा चन्द को कुछ कहना चहता था। सन्तमत या बाकी सब धर्मों के साधनों का परिणाम क्या है ? जीवन्मुक्त अवस्था। मैं निर्भय होके कहना चाहता हूं कि प्रकृति के पूर्ण भेद का न तो किसी सन्त को पता लगा और न ही किसी ऋषि को। जितना जितना किसी को अनुभव हुआ अपने अपने शब्दों में उसको वर्णन कर दिया और किसी न किसी ढंग से जीवन्मुक्त अवस्था प्राप्त कर ली और उसको

शान्ति मिल गई मगर जो संसारी लोग हैं और जिनको शारीरिक, मानसिक और आत्मिक खुशी और आनन्द की आवश्यकता है उनके लिए निचले दर्जों में साधन करना आवश्यक है। षट चक्रों का साधन या न्योली कर्म या योग के साधनों से शरीर स्वस्थ रहता है। सहसदल कमल में साधन करने वाले की स्थूल पदार्थ की आवश्यकतायें पूरी होती हैं और होनी चाहिए। त्रिकुटि के अभ्यासी की समझ बूझ बढ़नी चाहिए और ज्ञान मिलना चाहिए। सुन्न में अभ्यास करने वाले को मस्ती मिलनी चाहिए, महासुन्न के अभ्यासी को खुद मस्ती मिलनी चाहिए। भंवर गुफा में अभ्यास करने वाले को वेदान्त के अमली पहलु के कारण अहंभाव में आनन्द मिलना चाहिए और सतलोक के अभ्यासी को अपनी हस्ती के भान का आनन्द मिलना चाहिए। संतमत सतपद से आगे आरम्भ होता है। इसलिए हजूर दाता दयाल जी महाराज ने अपनी किताव अद्भुत उपासनायोग में लिखा है कि जब तुम्हारे अन्तर बीन बजने लगे और सफेद प्रकाश आ जाये तो फिर किसी पूर्णगुरु की तलाश करो। मैं अपने आपसे प्रश्न पूछता हूं कि

वह पूर्णगुरु क्या देगा ? वह उसको अपने बचनों द्वारा उसके अज्ञान को मिटाकर जीवन्मुक्त अवस्था में ले जायेगा। मगर खेद है कि मैं अभीतक उस अन्तिम अवस्था में जिसका मुझे अनुभव तो है मगर पूरे तौर से मैं वहां ठहर नहीं सकता। गिर जाता हूं। मेरा गिरना क्या है ? इसका एक उदाहरण देता हूं। आज संत तारा चन्द ने मुझे 5000- रुपये दिए जोकि उसको सत्संगियों ने मन्दिर के लिए दिए थे। जब उसने मुझे वह रुपया दिया तो एक मिन्ट के लिए मेरे मन में खुशी आई इस खुशी का मेरे मन में आना ही मेरा गिरना है। यद्यपि वह रुपया मंदिर के लिए था मेरा नहीं था। मैं भी सफर में चल रहा हूं। जब जीवन्मुक्त अवस्था आ जाती है तो फिर न हर्ष आता है और न शोक आता है।

दाता ! आपने मुझे फकीर बनने की हिदायत की थी मैं कोशिश करता रहता हूं मगर कभी २ गिर जाता हूं। तारा चन्द ! एक सच्चा फकीर बनना आसान काम नहीं है हज़ूर दाता दलाल जी महाराज ने लिखा था।

कठिन नाम है कठिन काम है कठिन फकीर कमाई ।
जग के भव दुख नशें पल में जब फकीर जग आई ।
तू फकीर बन तू फकीर बन तू फकीर बन भाई ।
मैं भी तरूं फकीर चरण लग ऐ फकीर सुखदाई ।

तुम आये हो तारा चन्द ! मैंने अपने ९१ साल के जीवन में जो कुछ समझा वह तुमको बता दिया ग़लत हूं या ठीक हूं इसका मुझे पता नहीं । क्योंकि तुम मुझे कुछ मानते हो इसलिए मैं तुमसे यह कहूंगा कि स्त्री जाति के चक्कर में मत आना । तुम मुझसे हज़ार दर्जे अच्छे हो मैं तो आपके पांव की जूति के समान भी नहीं हूं । आपका शारिरीक और मानसिक ब्रह्मचर्य कायम है और फिर तुम्हारी अपनी ज़मीन है लेकिन मैं दूसरों का आश्रित हूं तुम भाग्यशाली हो और ये तुम्हारे पिछले कर्म हैं । एक बात का ध्यान रखना कि संगत का पैसा दुखियों और गरीबों के काम आये ।

क्योंकि मेरा यह भाषण मानव मन्दिर या किसी और जगह भी छपेगा इसलिए एक बात और कहे जाता हूं ताकि संसार यह न समझे कि इस अवस्था को केवल ब्रह्मचारी ही पहुच सकता है । गृहस्थि

आदमी भी अगर गलतियें खाने के बाद अपने आपको किसी पूर्णपुरुष की हिदायत के अधीन रखे और बात उसकी समझ में आ जाये तो वह भी इस अवस्था को प्राप्त कर सकता है जिस अवस्था को मेरे जैसे पतित और जिनका विवाह बचपन में होने के कारण शारीरिक और मानसिक रूप से गिरे हुये हैं, पहुंच सकते हैं । जीवन का उद्देश्य केवल जीवन्मुक्त अवस्था है बाकी जो योग जप तप तीर्थ ब्रत आदि हैं ये सारे के सारे मानव की प्रकृति के अनुसार आदमी इस खेलों को खेलता है और अनुभव करता है । इसलिए कहा जाता है कि अगर पूरा सत्गुरु मिल जाये तो परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं ।

गुरु मिले तब काह कमाना हो ।

जब फकीर प्रर्ण हो जाता है तो उसको सत्गुरु कहते हैं । कबीर साहिब ने एक शब्द में लिखा है ।

तीर्थ गए तो एक फल सन्त मिले फल चार ।
सतगुरु मिले अनेक फल कहै कबीर विचार ।

सत्गुरु है सच्चा ज्ञान । ऐ तारा चन्द ! मैंने अपने अनुभव के आधार पर जो समझा वह वता

दिया। अगर तुम मेरी बात पर चलते रहो तो आप तो तरोगे ही दूसरों को भी सुख और शान्ति के भागी बनाओगे। और साथ ही संसार तेरे नाम को वर्षों तक याद करेगा मगर तुमने अपने नाम की मशहूरी के लिए यह काम मत करना। यही हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द में मेरे नाम लिखा था।

न अपना नाम रखना तुम न दुनियां में निशां रखना।
नहीं की जब गई आदत ज़वा पर तब न हां रखना।
मुकर होना अबस है और मुनकर होना है ग़लती।
न सिर में ऐसे सौदा का कभी बारे गिरां रखना।
न साहबे दिल न वे दिल बनने की तुम में हवस आवे।
न दिल देना न दिल लेना न बहरे दिलस्तां रखना।
अगर है तरक कर दो तरक का भी तरक बे गुमां।
मकां जब छुट गया फिर क्यों खियाले लामकां रखना।
खामोशी मानिये दारद कि दर गुफतन नमीं आयद।
न सच और झूठ कहने के लिए मुंह में ज़वान रखना।

सब को राधास्वामी।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक १२ जून १९७७

कोमल चित्त दया मन धारो, परमारथ का खोज लगाना ।
इन्द्रो थान विषय को त्यागो, सुरत शब्द में नित लगाना ।
सार पदारथ गुरु से पाओ, चरन कमल में प्रीत बढ़ाना ।
धारा अगम पकड़ सुरत जोड़ो, इस सतसंग में सदा समाना ।
चली सुरत नभ द्वारा झांका, अंडा तीन लोक दरसाना ।
परे जाय ब्रह्मंड समानी, सुन्न सरोवर कंवल खिलाना ।
अब तो काल कला सब हारा, मानसरोवर बैठ अन्हाना ।
अक्षर रूप निरखती चाली, छोड़ दिया अब देश बिगाना ।
सूरत साफ उड़ी ऊंचे कौ, छूट गया सब महल पुराना ।
आगे चढ़ चढ़ अधर समानी, शब्द शब्द का मर्म पिछाना ।
संत विना कोई समझे नाहीं, आगे जो जो भेद दिखाना ।
कहने में आवे नहिं पूरा, उलटा सुलटा करत बखाना ।
वाचक अपनी उक्ति लगावें, अमल बिना नहिं बूझ बुझाना ।

संतन की गति संतहि जानें, और कहो कैसे पहिचाना।
अपनी उक्ति चतुरता त्यागो, संत बचन को करो प्रमाना।
वह कहते देखी निज अपनी, तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना।
राधास्वामी सबसे कहते, संत भेद कोई भेदी जाना।

राधास्वासी। मेरा भाग्य बनाने वाले या संसार को बनाने वाले की मौज मुझे पंथ में ले आई। यह शब्द सुना। अपने आपसे पूछता हूं कि तुमको क्या मिला फकीर ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। इसलिए जो कुछ मैंने जीवन में अनुभव किया वह कहता रहता हूं मगर यह मुझे पता नहीं कि यह ठीक है या ग़लत है। वह शब्द में लिखते हैं।

कोमल चित्त दया मन धारो, परमारथ का खोज लगाना।

परमार्थ क्या है और कोमल चित और दया का भाव क्या है ? मैं आप लोगो का उपकार मानता हूं कि मेरा कर्म कटवाने के लिए आपलोग आ जाते हैं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। परमार्थ को ढूंडते ढूंडते मेरी आयु बीत गई। परमार्थ हमारे मस्तिष्क में एक अवस्था

है जहां रहते हुए हमको न कर्म धर्म का कोई विचार आता है, न दुख और सुख का विचार रहता है और न वहां 'मैं' और तू' का विचार रहता है और न वहां गुरु और चेले का विचार रहता है वह हमारी आद अवस्था है। यह मैंने अनुभव किया है परमार्थ का। खेद है कि मुझसे अभीतक वहां ठहरा नहीं जाता। चार दिन का जीवन है। चले जाना है। जो समझा अपने कर्म भोग वश बताता रहता हूं।

कोमल चित दया मन धारो परमारथ का खोज लगाना।

उस अवस्था में न राम का ध्यान, न कृष्ण का ध्यान, न गुरु का ध्यान और न चेले का ध्यान है, वह है परमार्थ। यही स्वामी जी महाराज ने जेठ महोने में फरमाया है कि अन्तिम अवस्था में न स्वामी है और न सेवक है, न राम है और न रहीम है, खालिख न है और न मखलूक है मगर वहां पहुंचने के लिए अपने चित्त को कोमल बनाओ। कोमल का अर्थ है नर्म। एक चीज़ नर्म है उसको जिस ओर इच्छा हो झुकालो। यही कोमलता है। हमारा मन कोमल कब होगा ? जब हमको किसी एक चीज़ की टेक नहीं होगी। जब तक हम किसी एक विचार के

साथ वन्धे हुये हैं हम मुड़ नहीं सकते। यह है कोमल चित्त। कोमल चित्त धारे बिना परमार्थ नहीं मिल सकता। जब तक हमारी बुद्धि को किसी चीज़ की टेक है वह कोमल नहीं। जब तक कोई आदमी राम को या कृष्ण को या बाबे फकीर को मानता है वह वहां से मुड़ नहीं सकता या हट नहीं सकता वह कोमल नहीं। मैं भी कोमल नहीं था मगर आपलोगों ने मुझे कोमल चित्त बनाया। देखो! जो आदमी किसीके थोड़े से कष्ट को देखकर रोने लग जाते हैं यह कोमलपना नहीं। यह शारीरिक निर्बलता है और यह बीमारी है।

कामलता मुझमें कैसे आई और मैं परमार्थ की ओर कैसे आया? केवल इस एक विचार से कि में किसीके अन्तर नहीं जाता। पहले मैं राम को पूजता था कृष्ण को पूजता था उनका रूप मेरे अन्तर प्रकट होता था। पता लग गया कि यह मेरा ही मन है। मेरा अहंकार था मेरे मन में। जब तक कोई आदमी पक्षपातरहित, आज़ाद ख्याल और सच्चाई पसन्द नहीं बनता और अहंकार को नहीं छोड़ता वह परमार्थ को प्राप्त नहीं कर सकता। जब तक कोई

आदमी राम, रहीम, कृष्ण, देवी या देवता या गुरु और चेले के साथ बन्धा हुआ है वह परमार्थ की मंज़िल पर नहीं पहुंच सकता। जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनके अनेक प्रकार के काम कर जाता है और उनके अन्त समय पर आकर उनको ले जाता है और मैं नहीं होता और न ही मुझे किसी बात का ज्ञान होता है तो मुझे विश्वास हो गया कि यह सब आदमी के मन के विश्वास का खेल है। तो मेरे अन्तर में भी जो रूप-रंग विचार भाव और संकल्प पैदा होते थे ये सब छूट गये ओर मैं मन से आगे जाने के लिए विवश हो गया। या यूं ह समझो कि मैं परमार्थ के मार्ग पर आ गया स्वामी जी कहते हैं "दया मन धारो" इससे स्वामी महाराज का क्या भाव है वह मुझे पता नहीं। मैंने जो समझा वह कहता हूं। एक आदमी कोई काम करता है। हम उसको बुरा समझते हैं और उसपर नुकताचीनी करते हैं। जब तक हम किसी की बुराई देखते हैं यह दया नहीं। जब तक हम दूसरों के दोष देखते हैं तब तक हमारा *Self* उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता।

यह दया और कोमलता की सबसे ऊंची अवस्था है। क्योंकि मैं उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता था इसलिए मैं अपने अनुभव के आधार पर इस शब्द की व्याख्या कर रहा हूं। जब यह अवस्था आ जाती है तो फिर आदमी हर प्रकार की टेक को छोड़कर घरेलू तौर से और रूहानी तौर से सच्चाई पर आ जाता है। जब से मुझे यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मेरा राग द्वेष जाता रहा और मैं कोमल चित्त हो गया। अब आप चाहे मुझ को और चाहे राधास्वामीमत को गाली देते रहो मुझे कोई क्रोध नहीं। क्योंकि मैं कोमल चित्त हूं।

जब तक हम नुकताचीन हैं तब तक हममें दया नहीं। मुझमें भी ये दोष थे। जब से मेरी यह आदत छूटी तब मैं वहां पहुंचा यद्यपि वहां ठहरा नहीं जाता, ये मेरे कर्म हैं या मुझमें कोई बुराई है। जब हम किसी की नुकताचीनी करते हैं तो हमको उस समय यह विश्वास नहीं होता कि यह सारा संसार उस मालिक का बनाया हुआ है और जो कुछ हो रहा है यह सब उसकी मौज से ही रहा है। हमारी

नुक्ताचीनी करने से यह सिद्ध होता है कि हम प्रकृति के साथ सहमत नहीं हैं।

कोमलता का अर्थ मैंने इस लिए किया है कि जो आदमी किसी को किसी शक्ल में मानता है तो मानने वाला उसका अपना ही मन है और जिसको वह मानता है वह भी उसका अपना हो मन है और कल्पित अवस्था है। इसका प्रणाम मेरा अपना अनुभव है कि लोग मुझे मानते हैं और मेरा रूप उतके काम कर जाता है लेकिन मैं तो होता नहीं इसलिए जब तक उनको यह ज्ञान नहीं होता कि यह सब माया है और यह हमारी कल्पना है तब तक उनमें अहंकार है और जब तक अहंकार है वे कोमल चित्त नहीं हैं और जब तक कोमलचित्त नहीं वे उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकते।

इन्द्री थान विषय को त्यागो, सुरत शब्द में नित लगाना।

जब तक मन में अकड़ है और अहंकार है और कोमलचित्त नहीं और मन में दया नहीं तब तक सुरत शब्द में लग ही नहीं सकती। लोग अभ्यास करते हैं कितने आदमियों की सुरत शब्द में लगती है ?

संतन की गति संतहि जानें और कहो कैसे पहिचाना।

जब आदमी कोमलचित्त बना और उसमें दया का भाव आया। रागद्वेष छोड़ा और दूसरों की नुक्ताचीनी छोड़ी तब वह संत बना। जो संत बना वही उसकी व्याख्या कर सकता है दूसरा नहीं कर सकता। जो संत नहीं वह इसकी जो इच्छा हो व्याख्या करे।

कोमल चित्त दया मन धारो परमारथ का खोज लगाना।

यह गुण आदमी में हो तब परमार्थ आता है। मैं अभ्यास तो आरम्भ से ही करता था। रामायण पढ़ता था, राम, कृष्ण और हजूर दाता दयाल जी महाराज के दर्शन करता था और शब्द भी सुनता था लेकिन असली चीज मुझे तब प्राप्त हुई जब मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनके काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता। इससे मुझे यह समझ आई कि मेरे अन्तर में भी जो कुछ प्रकट होता है यह सब माया है और संस्कार हैं जो मेरे मस्तिष्क पर पड़े हुए हैं। इस एक बात ने मेरे जीवन को बदल दिया फिर मैं यह तलाश करने के लिए विवश हुआ कि आगे क्या है। किसी बात का

रागद्वेष न होना ही कोमलचित्त होना है और किसी के दोष न देखना ही मन में दया का धारण करना है। मैंने बहुत शब्द सुने क्या शब्द के सुनने से मुझे शान्ति मिली ? नहीं। क्या शब्द सुनने के बाद मैं कामी नहीं बना ? बना। लोभी और क्रोधी नहीं बना ? बना। इसलिए जब तक कोई आदमी कोमल-चित्त नहीं बनता, मन में दया नहीं रखता और विषय विकार को नहीं त्यागता वह चाहे गुरु बन जाये चाहे चेला बन जाये और चाहे वह किसी को भी गुरु बनाले उसको परमार्थ नहीं मिलेगा। परमार्थ को प्राप्त करने के लिए मनके मण्डल मे ऊपर जाना पड़ेगा और मन को छोड़ना पड़ेगा। मन ही काल है और मन ही माया है। यही संत कहते हैं कि दसवें द्वार से आगे जाओ या निर्विकल्प समाधि से आगे जाओ तब काम बनेगा। जब निर्विकल्प समाधि लग जाती है तो कर्म धर्म बुराई और किसी की नुक्ता-चिनो ये सब चले जाते हैं और मन समाप्त हो जाता है। मन के समाप्त होने के बाद परमार्थ आता है।

वह शब्द में लिखते हैं कि "विषय को त्यागो"। विषय नाम है किसी चीज़ के साथ मन का जुड़कर

आनन्द लेना । स्त्री से आनन्द लेना विषय है, जीभ का स्वाद लेना विषय है, किसी सुन्दर चीज़ को देख कर खुश होना विषय है और अपने अन्तर में अनेक प्रकार के दृश्य देखना भी विषय है । जब तक ये विषय समाप्त नहीं होते परमार्थ नहीं मिल सकता। जब तक कोई आदमी सतचित्त आनन्द की अवस्था में है वह सूक्ष्म और कारण विषय से बरी नहीं है ।

दाता ! दाता !! दाता !!! आपने शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी । मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया लेकिन पता नहीं मैंने ठीक किया या ग़लत किया ।

सतचित्त आनन्द क्या है ? सत हैं शारीरिक बोधभान, चित मानसिक विचार और आनन्द रूहानी विचार । परमार्थ सत चित आनन्द से आगे है जिसका नाम संतों ने चौथा पद रखा है । अंश का कुल में मिल जाने का नाम परमार्थ है । आत्मा का परमात्मा में मिल जाना या जीव का ब्रह्ममय हो जाना परमार्थ है । यह बहुत ऊंचा मार्ग है । आप गृहस्थियों को इसकी आवश्यकता नहीं । क्या आप परमार्थ के लिए

मेरे पास आते है ? नहीं। आप लोग संसारी हैं और आपको संसार चाहिए। सनातनधर्म में परमार्थ को प्राप्त करने के लिए सन्यास अश्रम है। सन्यासआश्रम कोई डेरा या मकान नहीं है। सन्यास की अबस्था में अपने आपको रखना ही सन्यास आश्रम है और त्याग की अवस्था को प्राप्त करना ही सन्यास है। शारीरिक आनन्द, मानसिक आनन्द और आत्मिक आनन्द से परे जाना ही परम अर्थ अर्थात परमार्थ है। हमारे अन्तर में यह प्राकृतिक जज़बा है। आदमी सारा दिन काम करने के बाद नींद चाहता है अर्थात जो कुछ तुमने दिन भर किया है उसको भूल जाना चाहते हो, वह जो अवस्था है वह परम अर्थ अर्थात शान्ति है।

मैं पंथ में आया यहां अपने पूर्वजों का खण्डन पाया। पराशर भी भूल गया, वसिष्ठ भी भूल गया। वेदान्त भी कालमत बताया। राम और कृष्ण काल के अवतार। मुझसे खण्डन सहन नहीं होता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चाई से चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इसलिए मैं अपना कर्म भोगता हूं।

जानता हूं कि संसार इस सच्चाई को सुनने के लिए तैयार नहीं।

सार पदारथ गुरु से पाओ, चरन कमल में प्रीत बढ़ाना।

सार पदारथ क्या है ? सच्चाई, असलियत और हकीकत यह बाहर से पूर्ण गुरु के बिना कोई नहीं दे सकता। मैं जब यह लिखता हूं कि मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं तो अपने आपसे पूछता हूं कि तू समय का सन्त सत्गुरु है ? हां। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का जिससे तुम्हारा दीन भी बने, दुनियां भी बने और तुम्हारा परिणाम भी अच्छा हो। इसलिए मैं समय का संत सत्गुरु हूं और इसका प्रमाण मैं आज के सत्संग में दे रहा हूं कि मैंने क्या समझा। जो सार पदार्थ मुझे मिला वह संसार को दे रहा हूं। सार भेद उसको मिलता है जो गुरु के चरणों को पकड़ता है। राधास्वामीमत के अनुसार गुरु है शब्द और प्रकाश गुरु के चरण हैं। सनातनधर्म अनुसार इनका नाम है शब्दब्रह्म और पारब्रह्म। जब तक कोई आदमी अपने अन्तर प्रकाश को नहीं पकड़ेगा उसका मन आगे नहीं जा सकता। संसार ने ग़लत समझा। सारी आयु बाबे

फकीर के या किसी और गुरु के पांव धोकर पीते रहने से सार शब्द नहीं मिल सकता। यह भी हो सकता है कि किसीके पांव धोकर पीने से तुमको कोई बिमारी हो जाये। अब युग वदल गया। लोगों में भेड़चाल है। देखा देखी गुरुओं के पीछे भागते हैं। तुमको क्या पता कि मैं चोर हूं या डाकू हूं या मैं पूरा हूं। जो कुछ किसी के अन्तर होता है वही उसके अन्तर से निकलता रहता है और छूने से प्रभाव डालता है। लेनिक तुमको क्या पता कि मैं कामी हूं या क्रोधी हूं, ठग हूं या Practical man हूं मेरे पांव को हाथ लगाने से जो कुछ मेरे अन्तर है वही तुमको मिलेगा इसलिए मैं इसके विरुद्ध हूं।

ऐ दुनियां के महात्माओ और गुरु बनने वालो! जो लोग तुम्हारे पांव को हाथ लगायेंगे या तुम्हारी उंगलियां जिनके सिर पर लगेंगी तो जो कुछ तुम्हारे अन्तर में होगा वही प्रभाव उनके ऊपर पड़ेगा। अगर तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है, मन में हेराफेरी और (policy) है तो तुम्हारे प्रभाव स उनमें भी हेराफेरी और policy आयेगी।

सार पदार्थ क्या है ? स्वामी जी महाराज या कबीर साहिब ने संसार को क्या सार पदार्थ दिया इसका मुझे पता नहीं लेकिन ऐ सत्संगियो। दया तो हजूर दाता दयाल जी महाराज की है मगर जो सार पदार्थ मैंने तुम लोगों से पाया वह बता रहा हूं। गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल है और उनके चरन प्रकाश हैं। जब तक साधन करके कोई आदमी प्रकाश में नहीं जायेगा उसको सार पदार्थ नहीं मिलेगा। यह रहनी का काम है बुद्धि का काम नहीं है।

धारा अगम पकड़ सुरत जोड़ो इस सतसंग में सदा समाना।

आज अगर स्वामी जी महाराज होते तो मैं उनसे प्रार्थना करता कि अगम की धारा क्या है अगम है यह ज्ञान कि मैं कौन हूं। मैंने क्या ज्ञान प्राप्त किया कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। मैं अपने आपको या अपने बुलबुले को उस धारा के समुद्र के सपुर्द करता रहता हूं। मैं प्रकाश और शब्द में जाता हूं और वहां उस चीज़ को तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। इस ज्ञान से कि यह सब माया है

और कपने आपको इस ज्ञान के साथ जोड़ना ही अगम की धारा है। इस ज्ञान में रहना कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं और मेरा आद प्रकाश और शब्द है, ही अगम की धारा है। अगर मैं ग़लत हूं तो पंथ वाले मेरा खण्डन करें मुझे दुख नहीं। मैं ९१ साल का हो गया। जीवन में जो अनुभव किया वह बता दिया।

चली सुरत नभ द्वारा झांका, अंडा तीन लोक दरसाना।

जब अन्तर में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोधभानों में गये, लेकिन कब गये ? जब पहले चित्त कोमल हुआ, दया का भाव आया और विषय को छोड़ा। लोग प्रातः से सायं काल तक धोका और फरेब करते हैं और फिर कहते हैं कि सुरत शब्द योग नहीं बनता। बने कैसे ? मैं स्वयं कभी गिर जाता हूं। और मेरा भी नहीं बनता मगर अब ज्ञान की दृष्टि से बच जाता हूं। पहले जब कभी ऐसा होता था तो मैंने कई बार अपने मुंह पर थप्पड़ मारे और तम्बूरे तोड़े। अब समझ आ गई कि यह सब माया है। आप लोगों की दया से मैंने संतमत को समझा और यही हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था

कि फकीर ! तुमको सच्चा सतगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा । कबीर साहिब ने लिखा है ।

गुरु बतावे साध को साध कहे गुरु पूज ।
अरस परस के मेल से बूझी बूझ अबूझ ।

पिछले ज़माने में परदा रखा गया इस लिए कबीर साहिब ने धर्मदास को भेद बताने के बाद कहा था ।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सार भेद नहीं बाहर जाई ।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे फरमाया था ।

परदादारी राज़दारी बन गई शाने फकीर ।

स्वामी जी महाराज ने अपनी बाणी में लिखा है ।

संत बिना कोई भेद ने जाने वोह तोहे कहे अलग में ।

लेकिन मैंने परदा उठा दिया । क्यों ? क्योंकि मेरे ज़िम्मे निबल अबल अज्ञानी जीवों को भवसागर से पार करने का कर्तव्य है । सोचता हूं कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे ज़िम्मे कर्तव्य लगाया । क्या मैं किसी को भवसागर से पार कर सकता हूं

या क्या मैं जगत का कल्याण कर सकता हूं ? जो कुछ मैंने जीवन में अनुभव किया है अगर लोग उसको समझ कर उस पर अमल करें तो उनका कल्याण अवश्य होगा, अवश्य होगा और अवश्य होगा। कोई रोक नहीं सकता। इस लिए मैंने परदा खोल दिया अगर मैं परदा रखता तो मैं भी दूसरे गुरुओं की तरह नोटों की बोरियां भर लेता और लाखों लोग मेरे पास भी आते मगर अब बहुत कमलोग मेरे पास आते हैं।

परे जाय ब्रह्मण्ड समानी, सुन सरोवर कमल खिलाना।

ब्रह्मण्ड समाना क्या है ? इसी काम में आयु बीत गई। पिण्ड शरीर है। अण्ड मन है और ब्रह्मण्ड है प्रकाश की रचना। आदमी अभ्यास करके जब मन से निकल जाता है तो उसको यह अनुभव हो जाता है कि यह सब कुछ कैसे बना। ब्रह्मण्ड है विचार शक्ति को समझना और उसमें गरक हो जाना ब्रह्मण्ड समाना है या यूं ह समझो के मन के खेलों के भेद को समझना और चुप होके उसमें लय हो जाना ब्रह्मण्ड समाना है।

अब तो काल कला सब हारा, मानसरोवर बैठ आन्हाना।

क्या वहां कोई पानी है जिसमें तुमने नहाना है ? भाव यह है कि मन जो नाना प्रकार के विचार उठाता था वे उस स्थान पर बन्द हो जाते हैं। किसी ने किसी प्रकार कहा और किसी ने किसी प्रकार कहा वर्णनशैली भिन्न भिन्न है। हम लोग भाव को न समझ कर आपिस में झगड़ा करते हैं।

अक्षर रूप निखरती चाली, छोड़ दिया अब देश बिगाना।

क्षर अक्षर और निःअक्षर। क्षर है स्थूल प्रकृति, अक्षर है Mental Region अर्थात मन के विचार और निःअक्षर है आत्मिक अवस्था। जब सुरत सूक्ष्म प्रकृति को छोड़कर आगे चली जाती है तो मन के विचार समाप्त हो जाते हैं। मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और जाग्रत, स्वप्न या समाधि में किसी की सुरत को चढ़ा जाना है, किसी के परचे हल करा जाता है, किसी को दवाई बता जाता है लेकिन मैं नहीं होता। फिर वह कौन होता है ? यह सब कुछ अक्षर रूप बताता है। जब मन को छोड़ जाओगे तो बिगाने देश को छोड़ जाओगे अर्थात शारीरिक और मानसिक बोधभानों को भूल जाओगे। काश ! कि आज यह बाणियें लिखने वाले संत होते

और मैं उनसे कहता कि आपने यह रोचक बाणियें लिखकर संसार को चक्कर में डाल दिया।

हम आत्म स्वरुप हैं और हमारे सामने शारीरिक और मानसिक विचार आते हैं। ऐ सतसंगियो! तुमने मुझपर दया की और मुझे असलियत की समझ आई। मैं हजारों रुपये खर्च करके हजूर दाता दयाल जी महाराज के लिए सोने का ताज, चान्दी के हुक्के, जरीदार कपड़े और कीमती सिंहासान लेकर जाता था। आप लोगों की बदौलत मुझे पता लगा कि यह सब मेरे ही मन का खेल था और यही काल और माया है। शास्त्र कहते हैं कि जब तक माया नहीं छूटेगी आवागवन का चक्कर समाप्त नहीं होगा।

सुरत साफ उड़ी ऊंचे को, छूट गया सब महल पुराना।

मैं राम को मिलने निकला था। पहले राम और कृष्ण को मालिक समझता था फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज को मालिक मानता था। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन न मैं होता हूं और न ही मुझे कोई पता होता है तो मेरी आंख खुल गई। पुरुषोत्तम

दास ! तुम मेरे पुराने मित्र हो, बसरेबगदाद में तुम कहा करते थे कि मास्टर जी, कुछ हमें भी बताओ। जो कुछ मैंने समझा वह आज बता रहा हूं मगर मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है। अगर मैं ग़लत हूं तो बेशक लोग मेरा खण्डन करें, मुझे कोई दुख नहीं। यह शरीर हमारा घर नहीं है लोग यह समझते हैं कि यहां सदा ही बैठे रहना है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा था।

यह तो नहीं तेरा देश देश है बिगाना।
यहां सब बिगानें बसें कोई न यगाना।
गुरु ने उपदेश दिया और तुझे चिताया।
संत पंथ धार हिये कटे मोह माया।

मेरी मोह माया नहीं कटती थी। यह आप लोगों की बदौलत कटी और इस एक विचार से कटी कि मैं किसीके अन्तर नहीं जाता। इस एक परदे के कारण इन गुरुओं और महात्माओं ने संसार को लूटा हैं इस लिए मैं फकीर के चोले में अनामीधाम से संसार को सच्चाई बताने के लिए आया हूं और यही मेरा मिश्न है। मैं फूंक नहीं मार सकता। सच्चा भेद और सच्चा रहस्य बता रहा हूं।

आगे चढ़ चढ़ अधर समानी, शब्द सबद का मरम पिछाना।

शब्द शब्द का क्या मर्म है ? मैंने आप लोगों को बता दिया। विज्ञान के सिद्धान्त अनुसार कि घण्टा शंख क्यों बजता है, बादल की गरज अन्तर में कैसे होती है, बीन और मुरली क्यों बजते हैं। यह सब कुछ मेंने "पांच नाम और पांच स्थान" नामी किताब में विस्तार से लिख दिया है। मैंने यह मर्म संसार को बता दिया जोकि आज तक किसी सन्त ने नहीं बताया। हज़रत मुहम्मद साहिब ने अपने अन्तर में शंख सुना उसकी नकल अज़ान अर्थात बांग है।

दाता ! आपने शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी मैंने जो समझा वह कहा। मैंने किसी की नकल नहीं की। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं। हो सकता है मैंने जो समझा है वह ग़लत हो मगर मेरी नीयत साफ है। मेरी बात को वह समझेगा जो सच्चाई प्रिय होगा। जो पक्षपाती और टेकी हैं वे मेरी बात को नहीं समझ सकते, हां ! मेरे चोला छोड़ जाने के बाद वे भी समझेंगे कि मैंने क्या कहा।

संत बिना कोई समझे नाहीं, आगे जो जो भेद बताना।

यह तो रहनी का विषय है। जब तक कोई आगे नहीं जायेगा और वहां का अनुभव नहीं करेगा वह वहां के भेद को बतायेगा कैसे।

कहने में आवे नहीं पूरा उलटा सुलटा करत बखाना।

सब ने अपने अपने शब्दों में वर्णन किया। किसी ने उसको विस्माद कहा और किसी ने उसको उनमन कहा। स्वामी जी महाराज ने कुछ कहा और कबीर साहिब ने कुछ कहा। चीज़ तो एक ही है मगर संतों ने अपने अपने अनुभव अनुसार अपने अपने शब्दों में कहा।

बाचक अपनी युक्ती लगावें अमल बिना नहीं बूझ बूझाना।

मैंने अपनी रहनी के आधार पर बयाख्या की है। कोमलचित्त और दया मन धारो क्या है लेकिन जिसकी रहनी नहीं वह बुद्धि से व्याखया करेगा। वाचक ज्ञानी ओर अकली दुनियां के आदमी नुक्ताचीनी करते हैं।

संतन की गति संत ही जाने और कहो कैसे पहचाना।

संत की गति क्या है? सन्त भेद बताते हैं मगर संत में यह शक्ति नहीं कि वह किसी बीमार

को स्वस्थ करदे या किसी गरीब को धनवान बना देवे। तुम्हारे कर्म का फल तुमको मिलता है। लोग मुझसे एक नोट पर हस्ताक्षर करवाकर ले जाते हैं और लाखों में खेलते हैं। अगर मेरे हस्ताक्षर से ऐसा होता तो क्या मैं स्वयं लाखों में न खेलता ? यह सब विश्वास की बात है। तुम्हारे कर्म अनुसार तुमको मिलेगा। हमलोग सांसारिक वस्तुओं के पीछे मारे मारे फिरते हैं मगर मिलेगा वही जो भाग्य में है।

अपनी युक्ति चतुरता त्यागो संत बचन को करो परमाना।

मैं स्वामी जी की इस बात के साथ सहमत नहीं। हम क्यों किसीके बचन को मानें जबतक कि हम स्वयं न देख लें। मुसलमान कहते हैं कि इमान लाओ। यह ठीक है कि प्रारम्भ में इमान लाना पड़ता है मगर सारी आयु नहीं। मां बांप के कहने पर बच्चे को अपनी पैदा होने की तिथि पर विश्वास करना पड़ता है। बच्चे को बताया जाता है कि यह तेरी मां है यह तेरा बाप है और बच्चा मानने के के लिए विवश होता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे कहा था।

जब लग देखो न अपने नैंना।
तब लग मानो न गुरु के बैंना॥

मैं रोया करता था क्योंकि बाणी की मुझे समझ नहीं आती थी लेकिन मैंने बाणी को ग़लत नहीं कहा। आजकल के सन्तों ने संसार को सच्चाई नहीं बताई, परदा रखा और संसार को लूटा। हम संसारी संसार के इच्छुक हैं। किसीकी कोई बात पूरी हो गई तो फिर उसके पीछे दौड़ते हैं और लुट जाते हैं। संत तारा चन्द ने एक घटना बताई कि इनके इलाका में एक नौजवान लड़की का पति मर गया। पति के भाईयों ने यह यत्न किया कि इसका उनके दूसरे भाई के साथ विवाह कर दिया जाय लेकिन वह लड़की न मानी। उन्होंने उसको बहुत मारा लेकिन वह फिर भी न मानी। उसी दिन अचानिक उस लड़की का गुरु आ गया उसको पता लगा कि उन्होंने लड़की को पीटा है। वह कहने लगा कि जब ये लोग तुमको मारते थे तो वह चोट मुझको लगती थी इस लिए मैं तुमको बचाने के लिए दौड़ा आया हूं। यह सुनकर वे लोग डर गये कि यह गुरु तो बहुत करनी वाला है। साल दो साल के बाद वह स्त्री किसी आदमी के साथ भाग गई। लोगों ने उस गुरु से पूछा कि अब वह क्यों भाग गई? कोई उत्तर नहीं। ऐ दोस्तो!

मैं ये भाषण दर्दे दिल से दे रहा हूं ।

बोदी वाल तारा चढ़िया, घर घर पईयां विचारां ।
कुछ तो लुट लई मैं लोकां, कुछ लुटया नम्बरदारां ।

लोग हैं सम्बन्धी और नम्बरदार हैं धार्मिक गुरु । इन्होंने लूटा । तुम गुरु भक्ति नहीं समझते । गुरु को रुपया पैसा देना, कपड़े देना या सेवा करना गुरु भक्ति नहीं है । गुरु भक्ति क्या है ? सुनो ।

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने ।
गुन गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ सार तिस करे आहार ॥
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव मय सब गई गवाई ।

यह है गुरु भक्ति । मैं यह नहीं कहता कि तुम मेरी बात को मानो । मेरा तो कर्तव्य है । इस लिए यह काम करता हूं और बिलकुल साफ नियत से करता हूं ।

कह कहते देखी निज अपनी तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना ।

यह बुद्धि का काम नहीं है । इसलिए हर समय सोचते मत रहो और खुश रहने का यत्न करो ।

राधास्वामी सबसे कहते संत भेद कोई भेदी जाना ।

सन्तों का भेद कोई भेदी ही जानता है । शायद दूसरे मुझसे अधिक जानते हों । मुझे कोई दावा नहीं । ऐ दाता ! मेरे बनाने वाले !! तेरी रचना

तू ही जाने। मुझे बना दिया। आपकी दया से और सत्संगियों की दया से जो समझ मुझे मिली उसके आधार पर काम करता हूं लेकिन इसमें मेरा कुछ नहीं है। अगर ठीक है तो आपका है और अगर ग़लत है तो आपका है।

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सोंपते क्या लागेगा मोर॥

सब को राधास्वामी!

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक १३ अप्रैल १९७७ सायं काल

राधास्वामी । महात्माओ, दोस्तो, भाईयो, बहनो और संसारवालो !

"अदम से जानवे हस्ती तलाशे यार में आया"

मैं छोटी आयु से राम को मिलने निकला था । मेरा भाग्य, मौज या मेरे अच्छे बुरे कर्म मुझे पंथ में ले आये । इस पंथ में मालिक को कुछ और ही बताया । इस पंथ में सब मत मतान्तरों का खण्डन सुना तो दिल को चोट लगी । अब आप सुनो कि कबीर साहिब क्या कहते हैं ।

सब का साखी मेरा साई ।
ब्रह्मा बिष्णु रूद्र ईसर लौं, अव्याकृत नाहीं ।
पाँच पच्चीस से सुमती करि ले, ये सब जग भरमाया ।

अकार औंकार मकार मात्रा, इनके परे बताया ।।
जागृत सुपन सुषोपति तुरिया, इन तें न्यारा होई ।
राजस तामस सातिक निर्गुन, इन तें आगे सोई ।।
स्थूल सूच्छम कारन महाकारन, इन मिली भोग बखाना ।
विस्व तेजस पराग आत्मा, इन में सार न जाना ।।
परा पसंती मधमा बैरवरि, चौवानी नाहिं मानी ।
पांच कोष नीचे करि देखा, इन में सार न जानी ।।
पांच ज्ञान और पांच कर्म हैं, ये दस इन्द्री जानो ।
चित सोई अतः करन बखानी, इन में सार न मानो ।
कुरम सेस किर किला धंनजय, देवदत्त कंह देखो ।
चौदह इन्द्री चौदह इन्द्रा, इनमें अलख न देखो ।
तत पद त्वं पद और असी पद, बाच लच्छ पहिचानो ।
जहद लच्छना अजहद कहते, अजहद जहद बखाने ।
सतगुरु मिलै सत सबद लखावै, सार सबद विलगावै ॥
कहै कबीर सोई जन पूरा, जो न्यारा करि गावै ।

मैं राम को मिलने निकला था । ब्राह्मण होने के कारण मेरा हृदय इस खण्ठन को सहन नहीं करता था। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था कि सत्गुरु, की सेवा करो, मैंने सोने का ताज, चांदी के हुक्के और ज़रींदार कपड़े उनको पहनाये । उनके थूक खाये और उनका पेशाब तक पिया । जहां तक मुझसे हो सका मैंने उनकी सेवा की । एक दिन प्रातः से लेकर सांयकाल के पांच बजे तक मैंने उनको तंग

किया कि मुझे संतमत का मालिक दिखाओ। वह जहां भी जाते मैं उनके पास बैठ के रोता। सांयकाल उन्होंने फरमाया कि प्रातः तुमको संतमत का मालिक दिखाऊंगा। मैं प्रातः उपस्थित हुआ तो उन्होंने मेरी झोली में एक नारियल और पांच पैसे डालकर मुझे तिलक लगाया और मत्था टेका और फरमाया कि फकीर! मेरी आज्ञा मानो नाम दान दिया करो और सत्संग कराया करो तुमको सच्चा सतगुर सत्संगियों के रूप में मिलेगा। मैं बहुत प्रसन्न हुआ और फिर रोया। फरमाया कि तुम हसे क्यों और रोये क्यों? मैंने प्रार्थना की कि महाराज! हंसा तो इसलिए कि मुझे अहंकार आ गया कि मैं कुछ बन गया और रोया इस लिए कि मैं कुछ जानता नहीं, सत्संग में क्या कहूंगा। उन्होंने फरमाया कि फकीर! तुममें ९९ ऐब हो सकते हैं मगर एक सच्चाई है जो तुमको पार कर देगी और हो सकता है तुम दूसरों को भी पार कर दो। जो कुछ कहोगे सच्च होगा। काम करो। उनकी आज्ञानुसार मैं यह काम करता हूं और आप लोग मेरे सच्चे सतगुरू सिद्ध हुए। सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न और भंवरगुफा ये सब मन के दर्जे हैं

अर्थात मानसिक *feelings* हैं। मन की अनेक प्रकार की वृत्तियों का नाम सहसदल कंवल है। तीन प्रकार की वृत्तियां अर्थात ध्येय ध्याता और ध्यानी यह त्रिकुटि है। दो प्रकार की वृत्ति अर्थात द्वैत सुन्न महा-सुन्न है और मन को अकेला कर देना अद्वैत है। इसी का नाम है निर्विकल्प समाधि। यह भंवरगुफा है। इसमे आगे मन से परे आत्मिक वृत्ति है। मैं वहां जा नहीं सकता था क्योंकि मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज के रूप से बंधा हुआ था और मेरा वह टूटता नहीं था। जब से आप लोगों ने मुझे बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और आप लोगों के काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता और न ही मुझे कोई पता होता है तो मेरी आंख खुल गई और समझ आ गई कि सहसदल कवल, त्रिकुटि, सुन्न महासुन्न, और भंवरगुफा यह सब मन का खेल है और माया है। कल्पना है और सूक्ष्म प्रकृति है। क्योंकि हम इनको सत मानते हैं इसलिए इनके दृश्य हमारे सामने आते हैं। हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि फकीर! शिक्षा को बदल जाना। मुझे इस बात का कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं

कहता हू यही ठीक है मगर मुझे इससे शान्ति है । अब मैं न अनेकवाद में फंसता हूं और न द्वैत में । इस से आगे है आत्मपद अर्थात प्रकाश और शब्द । इनमें मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है उसका अन्त नहीं मिलता । वह है मेरी ज़ात, मालिक या मेरा आद । बचपन में मैं गाया करता था ।

वतन दुराड़ा देश दुराड़ा पईयां मैं लम्वड़े राहीं ।
साई मैंनूं पार लगाईं ।

उस समय मेरा जज़्बा था लेकिन आज मैं इस पर सफर करने के बाद अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं कि जिस मालिक के लिए मानवजाति आपस में बटी हुई है यह धोके में हैं । सबने अपनी कल्पना से मालिक को माना हुआ है । असल में वह खुदा नहीं वह उसका अपना ही मन है । यह अनुभव मुझे तुम लोगों से हुआ । ऐसे २ केस मेरे सामने आते हैं कि मैं चकित होता हूं और मुझे कोई पता नहीं होता । लेकिन लोग कहते हैं कि बाबा जी आप आये और आपने यह कर दिया और वह कर दिया । जब मैं

कहता हूं कि भई ! मैं कहीं नहीं जाता और न कुछ करता हूं तो कई लोग मेरा फोटो मुझे दिखाकर कहते हैं कि बाबा जी ! आप नहीं करते यह करते हैं। यह सब लोगों का अपना विश्वास है। क्या करूंगा झूठे मान और झूठी प्रतिष्ठा को लेकर। अगर मैं कहूं कि हां ! मैं जाता हूं और मैं मान बड़ाई लेना चाहता हूं तो मैं इस खोटे कर्म के फल से बच नहीं सकता। आजकल गुरुओं ने आप लोगों को नाम नहीं दिया। अपने डेरे, अपनी बड़ाई और अपने नाम के लिए नाम दिया। नाम का अधिकारी कौन है ? सुनो !

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, जगत पदार्थ चाह न ताके॥
तन इन्द्री अशक्त न होई, नींद भूक आलस जिन खोई।
विरह बाण जिन हृदय लागा, खोजत फिरे साध गुरु जागा॥

स्वामी जी महाराज की नाम लेने वालों के लिए यह शर्त है। आजकल तो जो भी आया उसको गुरु लोग नाम देते हैं और अधिकार को कोई नहीं देखता। कबीर साहिब की बाणी अनुसार नाम का अधिकारी कौन है ? सुनो !

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।
काम क्रोध मद लोभ विसारो। शील सन्तोष क्षमा सत धारो।
मद्य मांस मिथ्या तज डारो, हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से न्यारा है।

मेरे पास नाम धारी आकर शिकायत करते हैं कि सुरत नहीं चढ़ती। चढ़ै कैसे ? तुम लोग प्रातः से सायं तक काम भोगते हो फिर सुरत कैसे चढ़े।

जहां काम तहां नाम नहीं जहां नाम नहीं काम।
रवो रजनो दोउ न मिलै एक याम एक ठाम ॥

मेरी सुरत बारह साल तक नहीं चढ़ी। केवल रोना धोना ही था फिर बसरे-बगदाद में मैंने अपने अन्तर सूर्य चांद सितारे देखे। वीनें सुनीं। जब वापिस आया तो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी कि संतान पैदा करो। लेकिन मैं काम में फंस गया और मेरी शान्ति जाती रही। उस समय की मेरी फोटो देखने से आदमी खिच जाता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज का पत्र लेकर दो आदमी मेरे पास आये। मैंने कहा कि जाओ मेरे पास कुछ नहीं है और न मुझे कुछ आता है। उन्होंने वापिस जाकर दाता जी से कहा कि बाबे फकीर ने तो यह उत्तर दिया है। उन्होंने फरमाया कि जिसको फकीर

से कुछ नहीं मिला उसकी मेरे पास से भी कुछ नहीं मिल सकता। वे दोनों आदमी फिर मेरे पास आये और मुझे बताया कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने ऐसे फरमाया है। मैंने सोचा कि आखिर बात क्या है। मैं अपने अन्तर से स्वाभाविक निकले शब्द गाने लगा और आंखों से प्रेम के आंसू जारी हो गये। उस समय मेरे अन्तर आवाज़ आई।

जहां काम तहां नाम नहीं

फिर मैंने अपने आपको सम्भाला और तब मुझे शान्ति मिली। पहले का मेरा जो विषय विकार का जीवन था उसके संस्कार अभी तक भी मस्तिष्क में मौजूद हैं। दुनियां सन्त बनती है कोई सन्त बताये तो सही कि उसके अन्तर में कैसे बीतती है। मैं एक बार दिल्ली में दुसहरा के समय पर सत्संग करा रहा था। एक आदमी ने बताया कि दिल्ली में एक आदमी बेहोशी को दशा में संस्कृत बोलता है और लोग उस को टेपरिकार्ड करते हैं। यद्यपि जाग्रत में वह संस्कृत नहीं जानता। मेरे पास संत कृपाल सिंह जी बैठे थे मैंने उनसे कहा कि ये उसके मस्तिष्क पर पुराने संस्कार हैं। मैंने कहा कि मैं २६ साल तक अपनी

स्त्री की आखरी आयु में उससे जुदा रहा। उसके चोला छोड़ जाने के दो तीन साल बाद वह मेरे स्वप्न में आई और कहा कि तुमने मेरे साथ पाप किया है। मैं स्वप्न में कामातुर हुआ। है कोई महात्मा जो सच्चाई बताये ? कोई अपने अन्तर की हालत बताये तो सही ? कोई नहीं बताता ! सबसे पहले अपना चरित्र बनाओ। इसी लिए मैंने इस जगह का नाम मानवता मन्दिर रखा है कोई अध्यात्मिक नाम नहीं रखा। आप लोग आये हैं। हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा है शिक्षा को वदल जाना, सो क्या शिक्षा वदलूं। सुनो ! तुम भूल जाओ कि जो कुछ तुम जाग्रत में अच्छा या वुरा सोचते हो उसका प्रभाव मस्तिष्क पर नहीं रहेगा। जव स्वप्न के विचारों का प्रभाव तुम्हारे मस्तिष्क पर पढ़ता है तो जो विचार तुम जाग्रत में उठाते हो उसका प्रभाव तुम्हारे शरीर पर और मस्तिष्क पर क्यों नहीं पढ़ेगा। सनातनधर्म कहता है कि मन वचन कर्म से शुद्ध रहो। इस समय घरों में झगड़े हैं। राजनीतिक पार्टियों में झगड़े हैं। सिवाये घृणा और द्वैष के और है क्या। क्योंकि विचार में शक्ति है इसलिए मैंने शिक्षा को बदला

है कि अपने विचारों को ठीक रखो। अगर घर में झगड़ा करोगे तो उसका फल तुम्हारे लिए और तुम्हारे घर वालों के लिए बहुत बुरा होगा। मेरे पास नौजवान लड़के आते हैं जिस नौजवान को मैं रोते हुए देखता हूं तो मैं समझ लेता हूं कि इसका ब्रह्मचर्य गिरा हुआ है। इसलिए अपने बच्चों के ब्रह्मचर्य का ध्यान रखो। मैं संसार को यह शिक्षा देना चाहता हूं। मैं अपनी नीयत से शिक्षा को बदल रहा हूं। ठीक है या ग़लत यह मुझे पता नहीं।

मैं अपना मकान बनवा रहा था। मेरा दामाद आया वह कहने लगा कि पिता जी ! आप मकान इस तरह से बनवऐं कि समय पर आपके दोनों लड़के बिना किसी कष्ट या रद्दोवदल के इसको बराबर २ बांट सकें। मैने उत्तर दिया तुम शुकर करो अगर एक बच जाये। मैंने ऐसा क्यों कहा ? मेरे छोटे भाई के तीन लड़के मेरे पास पढ़ते थे और मेरे अपने वच्चे भी पढ़ते थे। भाई मुझे पैसे नहीं भेजता था और मेरे वेतन से गुजारा कठिन होता था इसलिये स्त्री प्रतिदिन झगड़ा करती थी इस लिए मेरा एक लड़का मर गया और मेरी *Readiug* ठीक निकली। मैं तुम

लोगों को अमली जीवन का पाठ पढ़ाता हूं । विषय विकार कम करो और घरों में लड़ाई झगड़े और हेरा फेरी मत करो वरना तुम चाहे किसी के पास भी चले जाओ शान्ति नहीं मिलेगी । अभ्यास करो या न करो मगर घरों में शान्ति से रहो । अभ्यास क्या है ? अभी के अर्थ पहले और आस के अर्थ होना । जो चीज़ पहले ही तुम्हारे पास है उसका साक्षातकार करना ही अभ्यास है बाहर से कुछ नहीं आता । जिस प्रकार के प्रभावों से मस्तिष्क बना है अभ्यास के समय वही चीज़ बड़ी शकल में तुमको दिखाई देती है । जैसे कि खुर्दबीन से एक छोटी चोज़ बड़ी दिखाई देती है ऐसे ही अभ्यास के समय अन्तर में सूर्य, चांद और सितारे दिखाई देते हैं इसलिए कहा गया है कि किसी पूर्णगुरु के सामने अपना दुख रखो वह तुमको तुम्हारी प्रकृति अनुसार उसका हल बतायेगा । एक बार मेरे एक मित्र ने मुझे कहा कि मेरा प्रकाश और शब्द नहीं खुलता । मैंने कहा कि तेरा प्रकाश और शब्द नहीं खुलेगा । उसने हजूर दातादयाल जी महाराज को बताया तो उन्होंने फरमाया कि उस बावले से तुमने क्यों पूछा ? घबराओ नहीं खुल जायेगा । हजूर दाता

दयाल जी महाराज के चोला छोड़ जाने के बाद फिर वही दोस्त मेरे पास आया। मैंने कहा क्योंकि तुम ने काम अधिक भोगा इसलिए तुम्हारे अन्तर न प्रकाश होगा और न शब्द। आप लोग आये हैं मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। अगर सुख और शान्ति चाहते हो तो विषय कम करो और अपने विचार को ठीक रखो। दुनियां विचार की है। तुम दुखी तो हो अपनी संतान से तो राम राम जपने से क्या होगा ? बच्चों का भी कोई दोष नहीं जैसे तुमने पैदा किए हैं वे वैसे ही होंगे। संतान यदि आज्ञाकारी नहीं तो उसके तुम जिम्मेदार हो। तुम लोग सत्संग के लिए आये हो पैसे भी देते हो। मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं इस लिये यह काम करता हूं। तुम सोचो तो सही कि तुमने अपने २ जीवन में क्या किया हुआ है। अब उसका फल तुमको ही भोगना पड़ेगा। किसी महात्मा ने अपना कच्चा चिट्ठा नहीं बताया और बगले भक्त बन के बैठे रहे और यही कहते रहे कि तुमको सत्तलोक ले जायेंगे।

मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा अनुसार शिक्षा को बदला कि गुरु नाम है सच्चे ज्ञान

सच्ची समझ और सच्चे विवेक का। जो गुरू अपनी बीमारी को ठीक नहीं कर सकता वह तुम्हारी बीमारी को क्या ठीक करेगा ? लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं स्वस्थ हो जाते हैं लेकिन मैं बीमार होता हूं तो डाक्टरों के पीछे फिरता हूं। क्या वे मेरे प्रसाद स स्वस्थ हो जाते हैं ? नहीं। बे अपने विश्वास से स्वस्थ होते हैं मैं तो स्वयं चकित हूं। मैं चार दिन के जीवन के लिए झूठ नहों बोलता। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। आपकी इच्छा हो तो सत्संग में आओ वरना न आओ। मेरी कोई किताब पढ़ो या न पढ़ो। इच्छा हो मन्दिर में चार पैसे दो या न दो।

न कुछ किया न कर सका न करने योग शरीर।
जो कुछ किया सो हरी किया भयो कबीर कबीर ॥

मैंने एक बार सन्त कृपालसिंह जी से कहा था कि यह जो हम लोगों को गुरु पदवी मिली है यह हमारे पिछले कर्मों का फल है। इस जन्म के कर्मों का तो पता नहीं क्या फल मिलेगा। यह कितना धोका है कि हम तुम लोगों को सतलोक ले जायेंगे कितना अनर्थ है कि हम लोग तुम्हारे अन्तर प्रकट होते हैं। मेरा एक दृश्य ही तो था जो मुझे जीवन भर नाच नचाता रहा। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कभी भी मुझे यह नहीं कहा कि फकीर ! मैं तेरे

अन्तर प्रकट नहीं हुआ। वह यही कहते रहे कि तू काल और माया में है। मेरी आज्ञा मानते चलो तुम माया से निकल जाओगे। जब मुझे असलियत की समझ आ गई तो मैंने किसी नियम के आधार पर हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से कहा था कि दाता! आपकी धाम उजड़ जायेगी और मेरा अनुमान ठीक निकला। मैं मानवता मन्दिर को उजाड़ना नहीं चाहता। अगर मैं सच्चाई न बताऊं और धोका देकर आप लोगों से मन्दिर के लिए पैसा लूं तो यह मन्दिर उजड़ जायेगा। इस समय कोई ऐसा डेरा नहीं है जहां झगड़े न हों और पार्टीवाज़ी न हो। देखो! तुम लोग आते हो और कहते हो कि बाबा जी! मैं बीमार हूं। दिवानो! अपने कर्म का फल तो अवश्य भोगना पड़ेगा। बचके कहां जाओगे। सन्तों, पीरों और अवतारों ने भोगे तो तुम क्यों नहीं भोगोगे। इसलिए धैर्य से काम लो यह समझो कि जो होगा अच्छा होगा। इस विचार से तुम्हारा जीवन वदल जायेगा। इसके लिए एक जगह विश्वास रखो और जगह 2 मत भटको।

लोग चाहते हैं कि मैं अपने मुंह से वैसाख महीने

का नाम आप लोगों को सुनाऊं । क्या इसमें कोई अच्छाई या सच्चाई है ? किसी के मुंह से नाम सुनने से अच्छा विचार मिल जाता है और अपना विचार बदल जाता हैं । यह बैसाख महीना है । अर्थात बेसाख, साख से जुदा या रिश्ता टूट जाना । हम अपने आद घर से जुदा हो चुके हैं । मुझे अपने आद घर की तलाश थी । मुझे आप लोगों की दया से घर का पता तो लग गया मगर अफसोस कि मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता । पता नहीं मेरा क्या परिणाम होगा मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज को तंग किया करता था । उन्होंने एक शब्द में मुझे फरमाया था ।

खेल खलाड सुगम सुहेला सुरत शब्द मत गांऊं
काल हिंडोले से तू बाचें, विधि बिचित्र समझाऊं ।।
कर सतसंग विवेक से गुरु का गुरु दयाल हितकारी ।
साधू बनकर साध ले युक्ती, जा झूले से पारी ।।
नर शरीर सुर दर्लभ पाया, सत संगत में आया ।
तेरा दांव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया ।।
अब की चूके मौज न ऐसी, त्याग काल की आसा ।
आज का साधन आजहो करले, कल को होगा उदासा
बार बार नहिं अवसर प्रानी, काल महा दुखदाई ।
जो कोई करे काल की आसा, सो पीछे पछिताई ।।
राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारन आये ।
सीस चरन में उनके झुकाकर, अपना काज बनाये ।।

तो यह खेल उन्होंने मुझे खिलाया। मैं न गुरु हूं न महात्मा और न ही अब में शिष्य हूं। मैं कौन हूं ? चेतन का एक बुलबुला *Evolution* के सिलसिले में पैदा हुआ। इस में एक 'मैं' आ गई और उसी मैं ने सारा जीवन खराब किया। अब बात समझ आ गई। मैं चाहता हूं कि अव उस अवस्था में रहूं मगर वहां रहा नहीं जाता। अब नेकनामी और बदनामी दोनों के विचार समाप्त हो गये क्योंकि मुझे यह समझ आ गई कि जो आदमी मेरी प्रसंशा करता है या मेरी बुराई करता है वह तो अपने ही मन की करता है मेरी नहीं करता। तुम देखो कि दूसरी जगहों पर एक गुरु के दो चेले इकट्ठे नहीं बैठ सकते क्योंकि आपिस में लड़ाई झगड़े हैं लेकि नहमको देखो कि हम सब एक ही गुरु के चेले हैं और बड़े प्रेम से इकट्ठे बैठे हैं। मैंने चेले नहीं बनाये यद्यपि मैं डिगरी होलडर हूं। अगर मैं पांच छः हजार आदमियों को भी नाम देता और प्रति चेला एक रुपया हर महीने भी मुझे मिलता तो पांच छः हजार रुपया हर महीने मुझे आमदनी होती। लेकिन मैंने 1942 के बाद किसी को नाम नहीं दिया। क्यों ? मेरे अनुभव ने सिद्ध किया है कि जो आदमी ध्यान

करता है और प्रकाश और शब्द का साधन करता है उसके मन की जो वासनायें हैं वो पूरी हो जाती हैं। कामी आदमी का काम बढ़ जायेगा और लालची आदमी का लालच बढ़ जायेगा। इसका मुझे कैसे पता लगा ? जबलपुर की एक स्त्री जिसके तीन बच्चे थे वह त्रिकुटि में अभ्यास करती थी, लाल रंग का सूर्य देखती थी, गुरु स्वरुप के दर्शन करती थी और बादल की गरज सुनती थी। वह मेरे पास आई, कहने लगी बाबा जी ! मेरे बच्चे तंग करते हैं मुझे अभ्यास नहीं करने देते। मैंने कहा कि तेरी सास है ? नहीं ! ननद है ? नहीं। मैंने कहा कि तेरा पति इसमें तेरी कुछ सहायता कर सकता है ? नहीं। क्योंकि वह प्रातः आठ बजे से सांय के आठ बजे तक बाहर ड्यूटी पर रहते हैं। मैंने उस स्त्री से तो कुछ नहीं कहा मगर पंडित बलीराम हकीम जो उस समय मेरे पास बैठे थे, से कहा कि इस स्त्री के तीनों बच्चे मर जायेंगे। उन्होंने चकित होकर कहा कि क्यों ? यह त्रिकुटि में अभ्यास करती है। बच्चे अभ्यास करने नहीं देते। इसलिए यह बच्चों से दुखी है। इसके बच्चों को सम्भालने का और कोई उपाय नहीं

है । क्योंकि इसका त्रिकुटि का अभ्यास है इसलिये इस की इच्छा पूरी होनी चाहिए । क्योंकि इसका और कोई *Alternative* नहीं है इसलिए मेरा अनुभव है कि इसके तीनों बच्चे मर जायेंगे । नौ महोनों में उसके तीनों बच्चे मर गये । मैं यह भाषण दर्देदिल से दे रहा हूं ।

मेरा लड़का मैटलरजी *(Meterllurgy)* में जाना चाहता था । लड़के ने मुझ से कहा । मैंने कहा मेरे पास केवल दस हजार रुपया है । इसमें से पांच हजार रुपया तुम्हारा है और पांच हजार सुशमना (मेरी लड़की का है । मेरे लड़के ने अपने चाचा को लिखा उसने लिख दिया कि मैं तुम्हारी सहायता करुंगा लेकिन मेरी स्त्री इस बात से सहमत नहीं थी कि राय साहिब सुरेन्द्र नाथ के लड़के मेरे लड़के को ताहने देंगे कि हमारे बाप ने तुमको पढ़ाया है । एक महीने बाद मैंने लड़के से कहा कि तुम पढ़ना चाहते हो तुम्हारी माता भी चाहती है कि लड़का पड़े और मैं भी चाहता हूं कि तुम पढ़ो । तुम्हारी पढ़ाई के पीछे तीन शक्तियें हैं लेकिन तुम दोनों राय साहिब से सहायता नहीं लेना चाहते और मेरे पास इतना रुपया नहीं है । इसकी प्रतिक्रिया यह होगी कि तुम्हारी

वहन बीमार हो जायेगी और मर जायेगी फिर तुमपढ़ सकोगे लड़के ने कहा कि आपका मस्तिष्क तत्वज्ञानी है। मेरी लड़की बीमार हो गई। डेढ़ महीना बीमार रही। मेंने वैद्य ऋषि राम को बुलाया। उसने देखा और कहा कि मामूली बुखार है स्वस्थ हो जायेगी। मेंने कहा कि यह स्वस्थ नहीं होगी। फिर मैंने अपने लड़के से और अपनी स्त्री मे कहा कि राय साहिब सुरेन्द्रनाथ को लिख दो कि उसका रुपया उसको वापिस कर देंगे लड़के ने उसको लिख दिया। मेरी लड़की स्वस्थ हो गई यह मेरे जोवन का अनुभव है। आदमीं के विचार में बहुत शक्ति है। जो कुछ आदमी के मस्तिष्क मैं होगा वही अभ्यास से फलेगा। हजूर महाराज राय सालिगराम साहिब जी रहाराज ने प्रेम बाणी में लिखा है कि जिनके मन गन्दे हैं और अपने गन्दे विचारों को रोक नहीं सकते या रोकना नहीं चाहते उनको शब्द अभ्यास नहीं करना चाहिए वरना उनकी हानी हो जायेगी लेकिन आज गुरुलोग क्या करते हैं? जो भी आया उसको नाम दे देते हैं। ये नाम नहीं देते विष देते हैं। आप लोगों को असलीयत और सच्चाई का पता नहीं है। हजूर दाता दयाल जी

महाराज की ओर से और हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की ओर से डिगरी होलडर हूं, मैं फिर भी नाम नहींदेता केवल सत्संग कराता हूं ताकि जीवों को जीवन व्यतीत करने का ठीक ढंग समझ में आ जाये। अनाधिकारी को नाम देने से उसको हानि हो जायेगी। एक आदमी पापी है और मन का गन्दा है अगर वह यह प्रवल इच्छा रखे कि उसका मन साफ हो जाये और वह भविष्य में दोषों और पापों से बच जाये तो वह अभ्यास करने से बच जायेगा।

सनातन धर्म कहता है कि शूद्र के कान में सिक्का भर दो ताकि वह गायत्री मन्त्र न सुन सके। शूद्र वह है जिसका मन गन्दा है इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता ओर जिस बात का वह अधिकारी है वह उसे वता देता हूं ताकि उसका जीवन सुधर जाये लेकिन आजकल यह गुरु लोग समाचार पत्रों में प्रकाशित करा देते हैं कि अमुक तिथि को अमुक स्थान पर लोगों को नामदान दिया जायेगा। जीवों को असलियत का पता नहीं हजारों की संख्या में लोग इकट्ठे हो जाते हैं और उनको बैठा कर नाम दिया जाता है। अधिकार और संस्कार को कोई नहीं

देखता । राधास्वामी राधास्वामी, राम राम या अल्ला 2 आदि 2 ये नाम नहीं नाम तो चौथे वद में है ।

नाम रहे चौथे पद माहीं ये ढूंडे त्रिलोकी माहीं सब से पहले अपने विचार को ठीक करो । किसी से शत्रुता मत करो । और किसी से धोखा फरेब और हेरफैरी मत करो । अपने परिवार का भला चाहो और फिर सुमरिन ध्यान करो ।

शास्त्र कहते हैं कि संतान के पाप के जिम्मेदार मां बाप हैं । प्रजा के पाप की जिम्मेदारी राजा पर है और चेलों के पाप का जिम्मेदार गुरु है इसलिए जो गुरु अपने डेरों, अपनी मान प्रतिष्ठा और धन के के लिए अनाधिकारी जीवों को नाम देते हैं उनके जीवन को नष्ठ कर देते हैं उनकी जिम्मेदारी गुरुओं पर आती है और उनको इसका फल भोगना पड़ता है ।

जो कुछ मैंने जीवन में अनुभव किया वह आप को बता दिया अगर आप यह समझते हैं कि मैं ठीक कह रहा हूं तो इस पर अमल करो और अपने जीवन को बनाओ ।

सब को राधास्वामी

हकीकत एक, समझ समझ का फेर

लेखक : सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़

बच्चे की आयु केवल दो वर्ष की है, बच्चे को डर लगा: खौफ आया, किसी ने डराया या कोई उस को मारने आया, तो बच्चा दौड़ कर अपनी माता (गुरु) की गोद में जा छुपा। बच्चे को पूर्ण विश्वास है कि वहां उस की रक्षा होगी। उसकी माता उस की रक्षक है। वो मारने वाले से बल्कि सब से बलवान है अधिक शक्तिवान है, इसलिये बच्चा अपनी माता की रक्षा में चला गया। कैसा सुन्दर और अटूट विश्वास है। बच्चा इस विश्वास का आश्रय लेकर पलता है। धन्य हैं वे बच्चे जिन को ऐसा विश्वास है और जिनको माता का सम्बन्ध मिला हुआ है।

बच्चा जवान हो गया अब 30 या 40 साल की आयु हो गई। संसार का कारोबार करने लगा अब स्वाधीन है। परिश्रमी है, अपने आप पर विश्बास है अपनी कोशिश से अपने कारोबार को सफल बना चुका है। किसी से शत्रुता हो गई, ठन गई, लड़ाई

हो गई, मरने मारने पर तैयार हो गया, मैदान में आ धमका, परवाह नहीं की, भय नहीं है कि शत्रु मुझ से वलवान है, उत्साह है कि मैं अपनी रक्षा आप कर सकूंगा, शत्रु को भगा दूंगा, शत्रु दौड़ जायेगा इस को यह विश्वास है ।

यह प्रत्येक दिन की घटतायें हैं. आप प्रतिदिन देखते हैं कि कभी ऐसा नौजवान अपनी माता की गोद से नहीं चिमटा देखा गया या ऐसा सुना गया है ।

क्यों ऐसा हुआ, क्या उस का वो बचपन का विश्वास टूट गया, हां टूट गया । अब आत्म बल आ गया, अब अपने आप पर विश्वास है, उसको अपनी ताकत पर विश्वास है कि मैं अपनी रक्षा आप कर सकता हूं ।

यह तवदीली आई, समय तबदीली लाया, समय समय की बात है ।

अब वो बूढ़ा हो गया । ८० या ८५ साल की आयु हो गई, चला जाता नहीं, कमज़ोर है, शरीर में ताकत नहीं, नज़र कमज़ोर है, ऊंचा सुनता है, किसी समय इस बूढ़े से ग़लत काम हो गया, अरे बूढ़े ! यह क्या कर रहे हो । आवाज़ आई, बूढ़े को एहसास

हुआ कि इस से ग़लती हो गई है। एकदम हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, प्रार्थना की, कि मुझे क्षमा करना।

कहां गये, वो जवानी के खेल, कहां गई वो अकड़, कहां गया उसका अहंकार और आत्म विश्वास, समय समय की बात है।

एक दिन तीनों संयोगवश बच्चा, जवान, बूढ़ा इकट्ठे हो गये और लगे अपनी अपनी बात, अपने अपने विचार और अपने अपने अनुभव बताने एक की दूसरे से टक्कर होने लगी, क्योंकि विचार और कर्म एक जैसे नहीं थे।

बच्चा बोला, मेरी माता (मेरा सतगुरु) सर्व शक्तिमान है। वो मेरी सदा रक्षा करते है। इसके साथ मेरा अनोखा सम्बन्ध है जिसका ब्यान करना असम्भव है। मुझे और मेरी माता को एहसास है, हम दो कालब एक जान हैं, मैंने कभी इसका ध्यान नहीं किया, मुझे ध्यान की ज़रुरत नहीं, क्योंकि वो सदा मेरे अंग संग है, मैं इसका सुमिरन भी नहीं करता, मुझे कभी इस की याद भूली नहीं, दिन रात सदा याद रहती है। मेरा इन पर अटल विश्वास है।

मैं इसके प्रेम में सदा बन्धा रहता हूं। हम दोनों प्रेम स्वरूप हैं, वो मुझे पालती पोसती है, जो कुछ मेरे लिये करती है ठीक करती है और ठीक हो रहा है। मेरा हर कर्म उस के अधीन है। मुझे दुख का कोई ज्ञान नहीं है, सुख ही सुख है, खुश रहता हूं। माता ही मेरा संसार है ज्यों ही मैं अपनी माता की गोद से चिपटा, संसार के सब पदार्थ मुझे मिल जाते हैं।

वो मेरे अवगुण नहीं देखती, वो मेरी ग़लतियां (पाप, बुरे कर्म) क्षमा कर देती है उसके प्यार से और उसकी संगत से मुझे बल मिलता है, आनन्द मिलता है, बुद्धि मिलती है, शान्ति मिलती है। मेरी माता के समान इस संसार में दूसरा कोई नहीं है।

जवान ने फिर जबान खोली, कहने लगा कि मेरी माता (मेरे गुरु) ने मुझे चिताया, मैंने उनका सतसंग किया, उनकी सेवा की, उनके बचन सुने उन का हुक्म माना, मुझे वहुत लाभ हुआ। मुझे इस संसार में जीने का राज़ मिल गया। मुझे हुकम मिला खूब काम करो, उन्नती करो, संसार में फैलो बढ़ो, किसी का अश्रय मत लों, अपनी नेक कमाई से फायदा उठाओ।

गुरु और पारस में यही अन्तरो जान ।
पारस लोहा कंचन करे गुरु कर ले आप समान ॥

गुरु का बल लेकर मैं संसार में निकला, अब मैं अचिन्त हूं, वेफ़िकर हूं, आज़ाद हूं, कर्म करता हुआ अकर्मक हूं। मुझे हानी और लाभ की परवाह नहीं है। पाप, पुण्य का ध्यान नहीं, पूर्बले कर्म कट रहे हैं, कट कर रहेंगे, मैं जन्म मरन से रहित हो जाऊंगा।

बूढा सब की बातें ख़ामोशी से सुन रहा था आख़र उसने ज़बान खोली, दबी ज़वान से कहने लगा कि शरणागत्म जैसी कोई दवाई नहीं है। इस का प्रयोग करो. सब दुख और कष्ट दूर हो जावेंगे। यहां सब प्रकार की फ़िलासफ़ी समाप्त हो जाती है। फिकर और सोच की ज़रूरत नहीं, सदा शरण का ध्यान रहे, शरणागतम रहो, जो हो रहा है ठीक हो रहा है, जो होगा ठीक होगा, जो हुआ ठीक था जबान पर किसी किसम की कोई शिकायत नहीं, क्या शिकायत करूं, शरणागतम जो हो गया।

बूढ़े ने कहा, मैंने खूब ज्ञान ध्यान करके देख लिया, खूब अम्यास किया, अब मैं इस नतीजे पर

पहुंचा हू कि मैं एक चेतनता का बुलबुला हूं, उसकी मौज से संसार में पैदा हुआ हूं, उसकी मौज से मेरी हस्ती खत्म हो जायेगी। महासागर से मिलकर एक हो जाऊंगा, इसलिये अब शरणागतम में आनन्द लेता हूं। इसी में शान्ति है।

ध्यान पूर्वक देखें कि तीनों में कितना फ़रक है, यह सब आयु के कारण है, मजबूरी है, जैसे जैसे प्रकृति बदलती गई, जीव के भाव, विश्वास आस और जिन्दगी में फ़रक पड़ता गया। दुनियां का तजरबा, अपनी जिन्दगी का असर और तालीम, सत्संग ने अपना असर दिखाया ओर मन धीरे-धीरे बदलता गया, इसलिये इन तीनों के विचार और भाव एक जैसे होने असम्भव हैं।

सच्चाई तो एक है लेकिन सच्चाई और हकीकत को ब्यान करना, दूसरी बात है इसलिये फ़रक नज़र पड़ता है।

नकल पत्र जो कि श्री परमानन्द सिरपुर आन्ध्रप्रदेश को लिखा ।

प्यारे भाई,

राधास्वामी

आपका 101 रुपये का ड्राफ्ट मिला कैश होने पर मंदिर आपको रसीद भेजेगा ।

मानव मंदिर में जितनी किताबें छपती हैं उनकी कोई कीमत नही रखी है । करीबन २६०० कापियां हर मास फ्री जा रही हैं ।

खुशी से प्रेम से जो भी दान आप मंदिर को देना चाहें वो देते रहें । यहां तीन हस्पताल भी हैं । और फ्री पब्लीकेशन है ।

मगर एक बात कहूं । भवसागर से तरना या मरण जन्म से बचना चाहते हो तो यह दान जप तप तुम्हें पार नहीं करेगा, न जन्म मरण से ही बचायेगा । जन्म मरण उनका छूटता है जिनका किसी भी स्थूल पदार्थ से मरने के समय मोह नहीं होता । काम करो दुनियां में काम करने के बगैर गुज़ारा नहीं । मगर अपने आपको फंसाओ नहीं ।

यह संसार कर्म क्षेत्र है। प्रेम दोगे प्रेम मिलेगा, धन दोगे धन मिलेगा, सेवा करोगे सेवा मिलेगी और यह हर गृहस्थि को करना चाहिये। जो देता नहीं उसे मिलेगा क्या ? यह प्रवृत्ति है।

बच्चा ! मेरे पास शुभ भावना है चाहता हूं तुम्हें सेहत, दौलत, मन की शान्ति और सच्चा ज्ञान मिले।

आपका :
फकीर

नकल पत्र जो महात्मा दयाल दास जी को लिखा

मानवता मन्दिर होशियारपुर 25 जून 1977

दयालदास ! राधास्वामी

आप धन्य हैं, मैं भी धन्य हूं कि मुझे आप जैसे महापुरुषों के दर्शन मिले। मेरा जो निज अनुभव है वह यह है :—

में असलियत या अपने घर जाने का इच्छुक था। आप सत्संगियों के अनुभवों से मैं उस रहस्य को पा गया कि जितना खेल संसार मैं है सब मनका है। मन में बड़ी शक्ति है, और मैं यह मानता हूं कि सिद्धि शक्ति भी ज़रूर कुछ है। मैं सिद्धि शक्ति में नहीं फंसा और न फंसना चाहता हूं। आप अपना कर्म भोगते हैं, में अपना कर्म भोगता हूं। आप जो चाहें करें। मैं ख्याल की ताकत को ज़रूर मानता हूं, मगर संतों का मार्ग मन से परे का है। यह सिद्धि शक्ति, बीमारों का राज़ी करना, सब मनके चक्कर में हैं। अगर मैं इस में फंस गया तो मैं इस संसार के चक्कर से बाहर नहीं जा सकता।

लोग मुझे गुरु मानते हैं। मैं गुरु नहीं हूं। मेरा दरवाज़ा आप के लिये खुला है। जब भी आप का जी चाहे आप मेरी गोद में आ जाइये। अभी तजरबा होगा। जिन्दगी बाकी है। सांप के काटे हुए का इलाज करने वाला खुद सांप द्वारा काटे जाने के कारण मरता है।

मैंने बड़े २ सन्तों और भक्तों के हाल देखे। बड़ी २ सिद्धि शक्ति वालों के हाल देखे। ऐसी ऐसी बीमारियों में पड़कर मरे जिसका कोई हिसाब नहीं।

दयालदास ! मैं बहुत ऊंचा चला गया। मेरे लिये यह संसार सब ही बझा का बालक है। मैं कुछ करता नहीं कराता नहीं। पिछले कर्मों के कारण या दाता दयाल जी महाराज की आशीर्वाद से मुझे यश मिलना था, इतना मिला कि मैं ब्यान नहीं कर सकता।

संत कबीर ने कहा है —

साहिब से सब होत है. बन्दे से कुछ नाहिं।
राई को पर्वत करे और पर्वत राई माहिं॥
न कुछ किया न कर सका न करने योग शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया भयो कबीर कबीर॥

जिन्दगी तुम्हारी अभी बाकी है, बहुत कुछ अनुभव होगा। मैं आपका ही नहीं तमाम सत्संगियों का सेवक हूं। मेरे लायक कोई सेवा हो तो दयालदास हुक्म करना मैं ताबेदार हूं। देखो दयालदास! मैं दर्देदिल से कह रहा हूं "बड़े २ अहंकारिये नानक गर्व गले!" जब भी आप आना चाहें आऐं, मगर एक शर्त है कि स्त्रियों को साथ बैठाकर आप मन्दिर में अभ्यास नहीं करा सकेंगे। मैं यह पत्र मानव मन्दिर में छपवाऊंगा, ताकि जो लोग अपनी बीमारीयों में आपसे लाभ उठाना चाहें तो उठा लें। बड़ी खुशी की बात है। मेरा अपना मार्ग तो अब "साधो घर चलने का बेला है"।

ऐसा काम न करना जिससे मन्दिर की बदनामी हो। मुझे तो अपनी नेकनामी या बदनामी की कोई इच्छा नहीं रही मगर दाता दयाल के नाम को या उनके मिशन को मैं बदनाम नहीं करना चाहता।

दयालदास! मेरा अनुभव यह कहता है कि जो कुछ किसी को मिलता है, यह उसका अपना विश्वास है, श्रद्धा है या उसके अपने कर्म हैं।

मैं शुभ भावना देता हूं। जो विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं, बीमार राज़ी हो जाते हैं, सुरतें चढ़ जाती हैं। मैं तो कुछ करता नहीं। रोज़ाना चिट्ठियां आती हैं। सिर्फ शुभभावना देता हूं।

आपका

फकीर

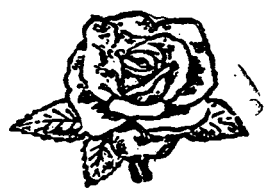

पूज्य श्री जयप्रकाश नारायण जी महाराज, प्रणाम ।

दुनियां भी यह समझती है और मैं भी यह समझता हूं कि आप मानव जाती तथा भारतवर्ष के सच्चे हितैषी हैं ।

जो विचार आप सरकार एवं जनता को देना चाहते हैं क्या आप समझते हैं कि शासकगण व जनता उनको स्वीकार करेंगे । मैं यह पत्र आपको अपने कर्त्तव्य वश जो मेरे गुरुदेव दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी वर्मन एम. ए. ने दिया था उस आज्ञा के पालन में लिख रहा हुं । आज्ञा उनकी थी कि

"तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल स्नेही ॥

जिसको भी जो कुछ मिलता है, मिल गया है और मिलना है,वह या तो प्रारब्ध कर्म अथवा वर्तमान जीवन के कर्म का फल है, कर्म की जड़ वासना में है । जैसी आसा वैसी वासा । आप बीमार हैं, मैं भी बीमार होता हूं । बड़े २ संत और महात्मा भी बीमार हुए । क्यों हुए या तो मानना पड़ेगा कि उनके अपने ही कर्मों का फल है । अगर कर्मों के फल को न मानों तो यह मानना पड़ेगा कि जिसने यह दुनियां

बनाई है उसका खेल है, ऐसी दशा में मानव जाति क्या करे ? वह यह है कि मानव अपने विचार व कर्म को ठीक करे और जो कुछ उसने किया है उसे भोगने में हाय 2 न करे। कर्म को न माने तो इसी विचार से शान्ति प्राप्त करे कि जो कुछ हो रहा है उसकी इच्छा है। हमारे देश में घृणा, क्रोध गैरीयत की पहले भी कमी न थी, और जब से चुनाव पद्धति आई, प्रजातन्ज आया, यह दोष और भी बढ़े, अवश्य ही इस का परिणाम भी भोगना पड़ेगा। न्यूटन का सिधान्त बताता है कि यदि हमारा हाथ हिलता है तो उसकी लहर आकाश व तारा मंडल तक जाती है और वहां से वहीं वह लहर पुनः आती है जहां से चली थी।

हमारे विचार सूक्ष्म शक्ति है यह भी आकाश तक तरंगे भेजते हैं और समय आने पर अपना प्रभाव दिखाते हैं। यह दुनियां तो कुत्ते की दुम है, बारहवर्ष नलके में रखो और निकालो तो टहड़ी की टहड़ी। सब सरकारें कारप्शन के विरुद्ध संघर्ष करती हैं। क्या आप समझते हैं कि शासन करने वाल सफलता प्राप्त करेंगे? हां, बल प्रयोग और कठोरता से कुछ सफलता हो जावे किन्तु वर्तमान समय में भारत वासियों के जैसे

विचार हैं उनको देखते हुए कोरप्शन दूर होनी संभव नहीं दिखाई देती। कल ही मैंने आपका एक आर्टिकल पढ़ा है जिससे जाना कि आप जनता पार्टी के कामों पर भी दुःख प्रकट करते हैं तथा आप प्रसन्न नहीं हैं।

मेरे मन में विचार आया कि आपको कुछ कहूं। आपकी पिछली उमर है इस झमेले में न पड़ें अपना आगामी जन्म संवारें। यह तो जब से दुनियां बनी है सदा ही उतार चढ़ाव आते ही रहे हैं। हां, यदि कुछ भला भारत का चाहते हो तो यह जो दलों का, पार्टीयों का शासन है इसे बन्द करो, जनता जिनको अच्छा समझती है, उनको चुने। मगर अब तो चुनाव लड़ने वाले पब्लिक के पांव पर बोट के लिये अपना माथा रगड़ते हैं। पार्लियामेंट के मेम्बर की तन्खाह कितनी है और उसका चुनाव में खर्चा कितना होता है। क्या पांच बर्ष में वह खर्चा तन्खाह से निकल जाता है? जो आदमी चुने जावें उनका नाम कांग्रेस, जनता या चाहे कुछ भी रख लो किन्तु जब कोई कानून बने तब प्रत्येक व्यक्ति की राय ली जावे अधिक से अधिक राय होने पर ही कानून बनें, यह है आटो डेमोक्रेसी। अनुभव बतावेगा कि प्रजातन्त्र

और चुनाव की पद्धति क्या परिणाम लायेंगे। कोई ऐसा देश नहीं जहां ऐसे झगड़े न हों। यदि कर सकें तो यह करें अन्यथा कांग्रेस, जनता या कोई भी पार्टी क्यों न आ जावे देश में शान्ति और समृद्ध शालता नहीं आ सकती।

मैं जब से स्वराज्य आया है तभी से कहता आ रहा हूं कि प्रजातन्त्र या यह चुनाव पद्धति प्रजा केलिये मीठा ज़हर है श्री जयप्रकाश! मैं आपकी इज्जत करता हूं मेरे सिर पर गुरु ऋण है। उसे उतारने को में यह पत्र लिख रहा हूं प्रत्येक व्यक्ति का विचार वाणी ब्रह्माण्ड में स्थित रहते हैं और जब जहां आवश्यकता होती है अपना प्रभाव भी करते हैं। मैं और क्या लिखूं ? इसीलिये वेदमार्ग में शिव संकल्पं अस्तु कहा गया है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ, मान प्रतिष्ठा के लिये किसी अन्य का मन न दुखावें, बदनाम न करें यही वेदमार्ग है ।

ऐ दाता ! ऐ सर्वाधार !! आपने तो आज्ञा जगत कल्याण के लिये काम करने की दी थी किन्तु कोई सुनता नहीं मैंने अपना कर्त्तव्य किया जगत कल्याण हो या न हो आप जाने ।

आखरी भात :-

ऐ प्रिय जयप्रकाश नारायण ! मैं दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कहता हूं यही ठीक है। हो सकता है कि मैं गलत हूं । किन्तु ऋषियों, सन्तों का मार्ग मन वचन कर्म से शुद्ध रहने का उपदेश करता है। मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभव के पश्चात गुरु आज्ञा को समझकर १५ अगस्त १९४७ से मनुष्य बनो की आवाज उठाई है और तब से अब तक ३६ वर्ष हो गए इसी दिशा में काम करता चला आ रहा हूं।

मेरे दाता दयाल ने कहा था शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। यदि कोई व्यक्ति इस आवागमन के चक्र से बचना चाहता है तो वह पारब्रह्म व शब्दब्रह्म या प्रकाश और उद्गीत राग को पकड़े।यदि कोई इस संसार मैंसुखी रहना चाहता है तो अपने संकल्पों को कल्याण कारी बनावे, यह मेरा अनुभव है। कर्म भोग और गुरु आज्ञा वश इस समय आपको भारतवर्ष में सबसे बड़ी और ऊंची हस्ती मानकर अपने विचार आपके चरण कमलों में भेंट कर रहा हू।

आपका फकीर

निवेदन

कई भाई पत्र व्यवहार करते समय या तो अपना पता लिखना भूल जाते हैं या इस तरह लिखते हैं कि पढ़ा नहीं जाता। फल स्वरूप उत्तर देना कठिन हो जाता है। कृप्या पता साफ और मोटे अक्षरों में लिखा करें।

सैक्रेटरी
मानवता मन्दिर
होशियारपुर

सांई की मौज

मानव मन्दिर पढ़ने वालों और विशेष कर उन सज्जनों को जो हज़ूर परम दयाल जी महाराज के प्रवचनों में सत्यत्व बुद्धि रखते हैं, यह जान कर हर्ष होगा कि के आगामी अंक जो अक्तूबर महीने में उन के हाथों में पहुंच रहा है, उस में महाराज जी की अनुभवपूर्ण रचना "सांई की मौज छपेगी। प्रतीक्षा करें।

निवेदक
सैक्रेट्री
होशियारपुर

सूचना

कई श्रद्धालु सज्जन चिरकाल से आग्रह कर रहे थे कि मानवता मन्दिर होशियारपुर में टेलीफोन लगना चाहिये। उनकी यह इच्छा पूर्ण हो गइ और टेलीफोन लग गया है जिसका नम्बर 2022 है, इस सेवा से आप आवश्यकता अनुसार प्रातः ८ वजे से सायं ६ वजे तक लाभ उठा सकते हैं।

सेक्रेट्री
मानवता मन्दिर
होशियारपुर

श्री जयप्रकाश नारायण को पत्र लिखने का कारण

मैंने श्री जयप्रकाश नारायण को कल पत्र लिखा है और उसे भिन्न २ प्रैसों में भेज दिया है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तेरे इस कार्य से क्या लाभ है। यह तू जानता भी है कि कई आदमी इस पत्र को पढ़ करके हंसी उड़ायेंगे, कोई भ्रमवश कहेगा कि फिर तू ऐसा क्यों करता है ? रात को इसी सोच बिचार में रहा।

डाक्टर जब कोई बीमारी का टीका लगा देता है तो टीका अपना प्रभाव किए बिना नहीं रहता। एक विचार दिया था दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज ने । १९३३ में सुनाम स्टेशन पर कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। वह ख्याल मेरे दिमाग़ में प्रभाव किये हुए है । और बेबसी की हालत में ही काम करता हूं मगर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, कि जो कुछ तूने लिखा है क्या यह तेरा ख्याल, और तेरे विचार ठीक हैं ?

हां ! यह ठीक हैं। क्योंकि इन्सान के ख्याल में

ताकत है। यह मनोमय जगत है, माया देश है। मुझे कैसे विश्वास हुआ कि ख्याल में शक्ति है? लोग अपने ख्याल, विश्वास और श्रद्धा मे मुझे याद करते हैं और मेरा रूप बनाते हैं। वह जो अपना ख्याल विश्वास और अपनी श्रद्धा से रूप बनाते हैं वह रूप उनकी मदद स्वप्न और जाग्रत में करता है। मुझे पता नहीं होता तो सिद्ध हो गया कि इन्सान के विचार में बड़ी भारी ताकत है। इसका दूसरा प्रमाण यह है कि सूर्य को गरमी समुद्र से पानी को खींचती है, जिस समय वह खींचती है तो क्या वह चीज़ जो पानी से निकली, किसी को नज़र आती है? नहीं। मगर जब वही सूक्ष्म बुखारात आकाश पर गये उसका क्या परिणाम निकला? वर्षा हुई और बाढ़ें आ गईं, नुक्सान हुए। इसी तरह से मेरी समझ में यह आया कि हमारे अन्तर से जिस प्रकार के विचार निकलते हैं और भाव उठते हैं अगर वह बढ़ते रहें तो यह इसी तरह से स्थूल बन कर प्रगट होंगे जिस तरह से वर्षा और बाढ़ें प्रगट होती हैं।

इसी नियम के आधार पर मैंने श्री जयप्रकाश नारायण को लिखा कि यह वर्तमान चुनाव प्रणाली

इस प्रजातन्त्र में सामूहिक तौर से घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, स्वार्थ और हेराफेरी पैदा करता है। और उसका परिणाम कभी भी देश के लिए शान्तिदायक नहीं होगा।

मुझे यह एक ऐसा विश्वास हो गया है और मैं हौसला से कहता हूं कि जब तक यह आपसी नफरत द्वेष और ईर्ष्या के विचार कम नहीं होंगे, तब तक मानव जाति का भविष्य खतरे में रहेगा। वर्तमान हड़तालें, घेराव और गुटबन्दियां, यह सब घृणा और द्वेष के भाव के कारण ही पैदा होते हैं।

कहने से था हमें सरोकार।
मानों न मानों आप हैं मुखतार॥

करबद्ध प्रार्थना

अपने कर्म के चक्कर में आकर कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा और हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज की आज्ञानुसार कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना और हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज की आज्ञा कि निर्भय होकर काम कर जाओ, मैं आज ३८ साल से यह काम कर रहा हूं।

हमारी यह संस्था एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट के अधीन है, कानून के अनुसार हम को जितना रुपया साल का आता है वो उसी साल में कम से कम ७५ प्रतिशत खर्च कर देना चाहिये। इसलिए मैंने फ्री प्रकाशन, होम्योपैथिक, एलोपैथिक, आंखों और दान्तों के हस्पताल जारी किये। पिछले वर्ष हस्पतालों में ५५५३२ रुपये दो पैसे खर्च आया और फ्री प्रकाशन में ३३३३२ रुपये ९३ पैसे खर्च आया।

मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने वालों की संख्या २६०० हो गई है और लगातार वढ़ रही है मेरी आयु 91 वर्ष की हो गई है। मुझ से अब अधि

सफर नहीं होता, इसलिये हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि जिन सज्जनों की मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने में रुची न हो वे इसे न मंगावें और जो मंगवाते हैं अगर उनकी आत्मा गवाही देती है कि उनको इस पत्रिका से कुछ लाभ होता है तो वे कृपा करके मन्दिर की यथा शक्ति सहायता करें।

रह गया हस्पताल, जब तक चलेगा चलाऊंगा नहीं तो बन्द कर दूंगा।

मैंने यह काम अपनी नीयत से बड़ी सच्चाई और निष्काम भाव से किया है। मैं यह जानता हूं कि दुनियां रोचक और भयानक बातों की तरफ ज्यादा झुकती है, फिर भी सच्चे मन से अपने कर्त्तव्य या कर्म को भोग कर इस संसार से जाना चाहता हूं।

हमारी संस्था में जनता के धन का उचित उपयोग होता है। मैं मानव मन्दिर मासिक पत्रिका ...ल्य रख देता किन्तु मैं ब्राह्मण होने के नाते ...र को जो सारे जीवन के संघर्ष से प्राप्त ...र नहीं चाहता। दान के रूप में ...कते हैं।

फकीर।

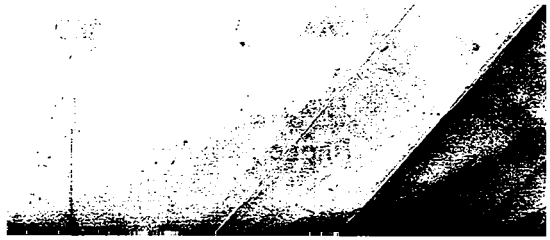

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

NW—HSP—7.

ADDRESS

To

72. Sh. Anand Rao ji
H. No1. —3—17
Khalasi-Gudda
Nr. Laxmi-Narain Mandir.
Secundrabad. (A.P.)

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022